

हिन्दी, उर्दू, पंजाबी में एक साथ प्रकाशित दिल्ली सरकार की पत्रिका

अंक: अक्टूबर-दिसम्बर 2018

दिल्ली

दिल्ली

नमस्ते

दुनिया को अभिवादन करता सिग्नेचर
ब्रिज बना दिल्ली की नई पहचान





दिल्ली सरकार गर्व से पेश करती है

सिन्नेचर ब्रिज

एशिया का पहला 154 मीटर ऊंचा धनुषाकार पुल



अरविंद केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली



दिल्ली

अंक : अक्टूबर-दिसम्बर 2018

प्रधान सम्पादक

डॉ. जयदेव षडंगी

सम्पादक मंडल

संदीप मिश्र

डॉ. पंकज श्रीवास्तव

नलिन चौहान

कांचन आज़ाद

सहायक सूचना अधिकारी (प्रकाशन)

उर्मिला बैनिवाल

छाया चित्र

सुधीर कुमार, अजय कुमार, योगेश जोशी

“दिल्ली” पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में

अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं

तथा दिल्ली सरकार का इनसे सहमत होना

आवश्यक नहीं।

पत्राचार का पता

प्रधान सम्पादक

दिल्ली सूचना एवं प्रसार निदेशालय

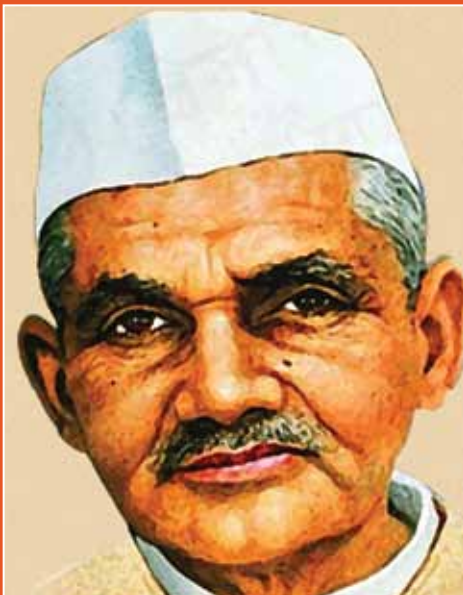
दिल्ली सरकार

खंड सं. 9, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

दूरभाष : 23819046, 23817926

फैक्स : 23814081

ई-मेल: delhidip@gmail.com



सच्चे गांधीवादी थे शास्त्री जी 28



इस अंक में...

हिन्दी

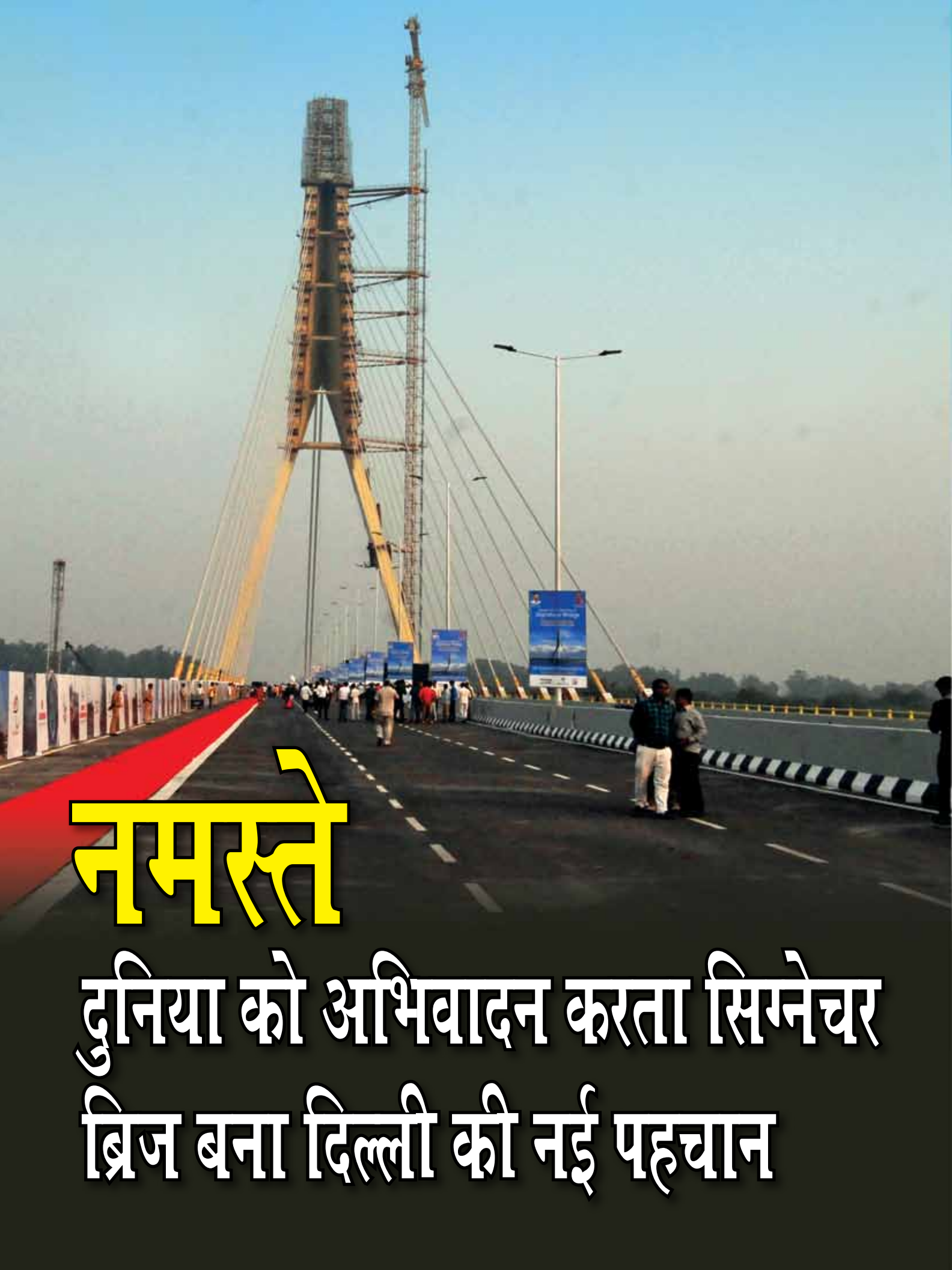
नमस्ते: दुनिया को अभिवादन करता सिग्नेचर ब्रिज.....	2
दिल्ली में चलेगी सफाई की पाठशाला.....	5
अब सरकारी स्कूलों से निकलेंगे कारोबारी.....	6
दुनिया चलेगी गांधी के रास्ते.....	8
चीन के प्रतिनिधिमंडल में समझा दिल्ली के सूचना विभाग का कामकाज.....	10
दिल्ली नाम का राज बतलाते प्रस्तर अभिलेख.....	12
राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर निदेशालय में संगोष्ठी.....	15
घर बैठे लीजिए डीटीसी बस पास.....	16
ऑपरेशन मिनिमम वेज.....	17
दिल्ली बनेगा झीलों का शहर.....	21
डोर स्टेप डिलीवरी में 60 नई सुविधाएँ.....	22
दिल्ली में दौड़ेंगी एक हजार इलेक्ट्रिक बसें.....	23
सुशासन के लिए मीडिया और सरकार में तालमेल आवश्यक.....	25
मेट्रो के चौथे फेज़ को मंजूरी.....	27

पंजाबी

ਨਮਸਤੇ। ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਸਿਗਨੇਚਰ ਬ੍ਰਿਜ.....	1
ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਚੱਲੇਗੀ ਸਫ਼ਾਈ ਦੀ ਪਾਠਸ਼ਾਲਾ.....	3
ਹੁਣ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਨਿਕਲਣਗੇ ਕਾਰੋਬਾਰੀ, ਸੱਤ ਲਖ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਪੜ੍ਹਨਗੇ ਕਾਰੋਬਾਰ ਦਾ ਪਾਠ.....	4
ਦੁਨੀਆਂ ਬਣੇਗੀ ਗਾਂਧੀ ਦੇ ਰਸਤੇ.....	6
ਘਰ ਬੈਠੇ ਲਓ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ.....	8
‘ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਮਿਨਿਮਮ ਵੇਜ਼’.....	9
ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ.....	10
ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਦੌੜਨਗੀਆਂ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਬੱਸਾਂ.....	13

उर्दू

1.....	سکپچر برج
3.....	دہلی میں چلے گی صفائی کی درس
4.....	اب سرکاری اسکولوں سے نکلیں گے کاروباری سات لاکھ طلباء پڑھیں گے انٹرپرائز کا سبق
6.....	دنیا بچے گی گاندھی کے راستے
8.....	انفارمیشن سیکشن کا کام کاج
9.....	کم از کم مزدوری کی گارنٹی کیلئے چلا ‘آپریشن منیمم ویج’
10.....	زندگی کو کامیاب بناتی ہیں گرونا تک کی تعلیمات
13.....	دہلی بنے گی جھیلوں کا شہر



नमस्ते

दुनिया को अभिवादन करता सिग्नेचर
ब्रिज बना दिल्ली की नई पहचान



नमस्ते। दिल्ली का सिग्नेचर ब्रिज दिल्ली की ओर से दसों दिशाओं को ऐसे ही अभिवादन करता नज़र आए लगा है। करीब 14 वर्ष के इंतज़ार के बाद वह घड़ी आई जब दिल्ली को उसकी नई पहचान मिली। 4 नवंबर को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के साथ इस पुल का लोकार्पण किया। पुल का शिखर कुतुब मीनार से दोगुनी ऊंचाई का है।

मुख्यमंत्री केजरीवाल ने पुल का लोकार्पण करते हुए इसे विकास की नई तस्वीर बताया। उन्होंने प्रथम प्रधानमंत्री



जवाहरलाल नेहरू को याद करते हुए कहा कि देश को मंदिर-मस्जिद की नहीं ऐसे ही निर्माणकार्यों की जरूरत है।

यमुना नदी पर बने इस ब्रिज से उत्तर और उत्तर-पूर्वी दिल्ली के बीच सफर करनेवाले लोगों की समय में बचत होगी। इसके साथ ही, वजीराबाद पुल के ऊपर ट्रैफिक का बोझ भी कम होगा।





मुख्यमंत्री केजरीवाल ने पुल का लोकार्पण करते हुए इसे विकास की नई तस्वीर बताया। उन्होंने प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को याद करते हुए कहा कि देश को मंदिर-मस्जिद की नहीं ऐसे ही निर्माणकार्यों की जरूरत है। पेरिस के एफिल टावर की तरफ सिग्नेचर ब्रिज के टॉप से दिल्ली का विहंगम दृश्य देखा जा सकेगा। टॉप पर ले जाने के लिए इस ब्रिज में चार एलिवेटर्स भी लगाए गए हैं। हर लिफ्ट से 50 लोग ऊपर जा सकेंगे।

पेरिस के एफिल टावर की तरफ सिग्नेचर ब्रिज के टॉप से दिल्ली का विहंगम दृश्य देखा जा सकेगा। टॉप पर ले जाने के लिए इस ब्रिज में चार एलिवेटर्स भी लगाए गए हैं। हर लिफ्ट से 50 लोग ऊपर जा सकेंगे।

यह देश का पहला केबल स्टाइल ब्रिज है। दूसरे चरण में इस ब्रिज को पर्यटन स्थल के तौर पर विकसित किया जाएगा। आठ लेन वाला 575 मीटर लंबा ब्रिज गाजियाबाद और लोनी जाने वालों का कम से कम आधा घंटा समय बचाएगा। ट्रैफिक जाम से काफी हद तक निजात मिल सकेगी।

सिग्नेचर ब्रिज के मुख्य पिलर की ऊंचाई 154 मीटर है। ब्रिज पर 19 स्टे केबल्स हैं, जिन पर ब्रिज का 350 मीटर भाग बगैर किसी पिलर के रोका गया है। पिलर के ऊपरी भाग में चारों तरफ शीशे लगाए गए हैं। यह ब्रिज अर्थव्यवस्था को रफ्तार देगा क्योंकि इसे देखने के लिए न सिर्फ एनसीआर और देश भर से बल्कि दुनियाभर के लोग आयेंगे।

इस ब्रिज का निर्माण कॉमनवेल्थ खेलों के पहले ही पूरा कर लिया जाना था। लेकिन काम को रफ्तार मिली, दिल्ली में केजरीवाल सरकार आने के बाद। सरकार ने इसका निर्माण पूरा कराने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया लगातार इस पुल के निर्माणकार्य का जायजा लेते रहे और रास्ते की तमाम बाधाओं को दूर करने में जुटे रहे। आखिरकार दिल्ली को उसकी नई पहचान हासिल हो गई। ■





दिल्ली में चलेगी सफ़ाई की पाठशाला

दिल्ली सरकार शिक्षा के क्षेत्र में नित नए प्रयोग के लिए जानी जाती है। इसी क्रम में अब स्कूलों में सफ़ाई का पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा। उपमुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने दिल्ली सचिवालय में आयोजित 'स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार' कार्यक्रम में इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस पाठ्यक्रम से बच्चे अपने स्कूलों की सफ़ाई में भागीदार बन सकेंगे और उनके अंदर सफ़ाई करने की आदत भी विकसित होगी।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि अब तक के मॉडल में स्कूलों में होने वाली गंदगी और फैलने वाले कूड़े में बच्चे भी भागीदार होते हैं, लेकिन सफ़ाई में उनकी भागीदारी नहीं होती। हर स्कूल में तकरीबन तीन से चार हजार बच्चे और शिक्षक आते हैं। यहां गंदगी और धूल को साफ करने के लिए अलग से सफ़ाई कर्मचारी होते हैं, लेकिन सफ़ाई को लेकर बच्चों की कोई जवाबदेही नहीं होती।

श्री सिसोदिया ने कहा कि वे चाहते हैं कि बच्चों के भीतर सफ़ाई करने की भी प्रवृत्ति विकसित हो। इसी उद्देश्य से

यह पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अगर हमें लगता है कि किताबों में सफ़ाई के बारे में पढ़ाने और 'स्वच्छ भारत अभियान' चलाने से ये सब ठीक हो जाएगा, तो यकीन मानिए कभी भी, कुछ भी ठीक नहीं होगा। उन्होंने बताया कि उन्होंने दुनिया के कई देशों में ऐसा मॉडल देखा है जहां बच्चे अपने स्कूलों में सफ़ाई में पूरी तरह से भागीदारी करते हैं। झाड़ू-पोछा लगाने, डेस्क की धूल साफ करने व पेड़-पौधों को पानी देने तक के काम में अपनी भूमिका निभाते हैं। इससे उनमें जागरूकता पैदा होती है। वे चाहते हैं कि दिल्ली के स्कूलों में भी यहाँ के हिसाब से कोई मॉडल विकसित हो।

उन्होंने कहा कि यह पाठ्यक्रम एक्टिविटी पर आधारित होगा। इसके लिए अलग से कोई पीरियड नहीं होगा। अलग से कोई किताब नहीं होगी। उन्होंने दिल्ली के सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों और बच्चों से इस बारे में सुझाव मांगा है। सुझाव में ये बताना है कि इस पाठ्यक्रम को विकसित करने में क्या-क्या गतिविधियां शामिल की जानी चाहिए और क्या-क्या गतिविधियां शामिल नहीं की जानी चाहिए। ■



अब सरकारी स्कूलों से निकलेंगे कारोबारी, सात लाख छात्र पढ़ेंगे उद्यमिता का पाठ

अगले सत्र से दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे 9वीं से 12वीं के सात लाख छात्रों को कारोबारी ज्ञान भी दिया जाएगा। सरकार ने इसके लिए उद्यमिता पाठ्यक्रम तैयार कराया है जिसे अप्रैल 2019 में बतौर पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया जाएगा। दिल्ली के शिक्षा मंत्री ने सभी स्कूलों को निर्देश जारी किया है कि जुलाई 2019 के पहले सप्ताह से लागू हो जाना चाहिए।

शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया द्वारा जारी अवधारणा नोट के तहत पाठ्यक्रम में दिल्ली के एक हजार सरकारी स्कूलों में 9वीं से 12वीं कक्षा के सात लाख छात्रों के लिए हर रोज एक घंटे की कक्षाएं लगेंगी। जिनमें दस हजार प्रशिक्षक कक्षाएँ लेंगे।

सरकार का लक्ष्य है कि 2019 की मई-जून की गर्मी की छुट्टियों में इस पाठ्यक्रम का मूल प्रशिक्षण पूरा कर

उपमुख्यमंत्री ने शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण राज्य परिषद (एससीईआरटी), दिल्ली के निदेशक को निर्देश दिया है कि वह एक वकिंग ग्रुप की स्थापना करें, जिसमें एससीईआरटी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), शिक्षा निदेशालय के शिक्षक के संकायों को शामिल किया जाए। इस ग्रुप के सदस्यों को यह अधिकार होगा कि वह अन्य विशेषज्ञों की सेवाओं को एक साथ लेकर आएंगे और एससीईआरटी के मानदंडों के अनुसार उनके पारिश्रमिक का भुगतान करेंगे।

लिया जाए। इसमें 9वीं से 12वीं कक्षा के छात्रों को दो ग्रुप में बांटा गया है। इसके तहत 9वीं व 10वीं कक्षा को जूनियर हाई स्कूल और 11वीं व 12वीं कक्षा को सीनियर हाई स्कूल में बांटा गया है। दोनों ग्रुप के लिए उद्यमिता पाठ्यक्रम को शैक्षिक सत्र 2019-20 में तैयार किया जाएगा।

उपमुख्यमंत्री ने शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण राज्य परिषद (एससीईआरटी), दिल्ली के निदेशक को निर्देश दिया है कि वह एक वर्किंग ग्रुप की स्थापना करें, जिसमें एससीईआरटी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट),

इस उद्यमिता पाठ्यक्रम या 'आन्ट्रप्रनर्शिप कैरिकुलम' के संबंध में श्री सिसोदिया ने कहा कि देश में बेरोजगारी सबसे बड़ी समस्या है लेकिन स्कूलों में ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती जिससे लोग खुद का व्यवसाय शुरू कर सकें। चतुर्थ श्रेणी की नौकरी के लिए भी एमबीए, इंजीनियर से लेकर पीएचडी स्टूडेंट तक आवेदन कर देते हैं।

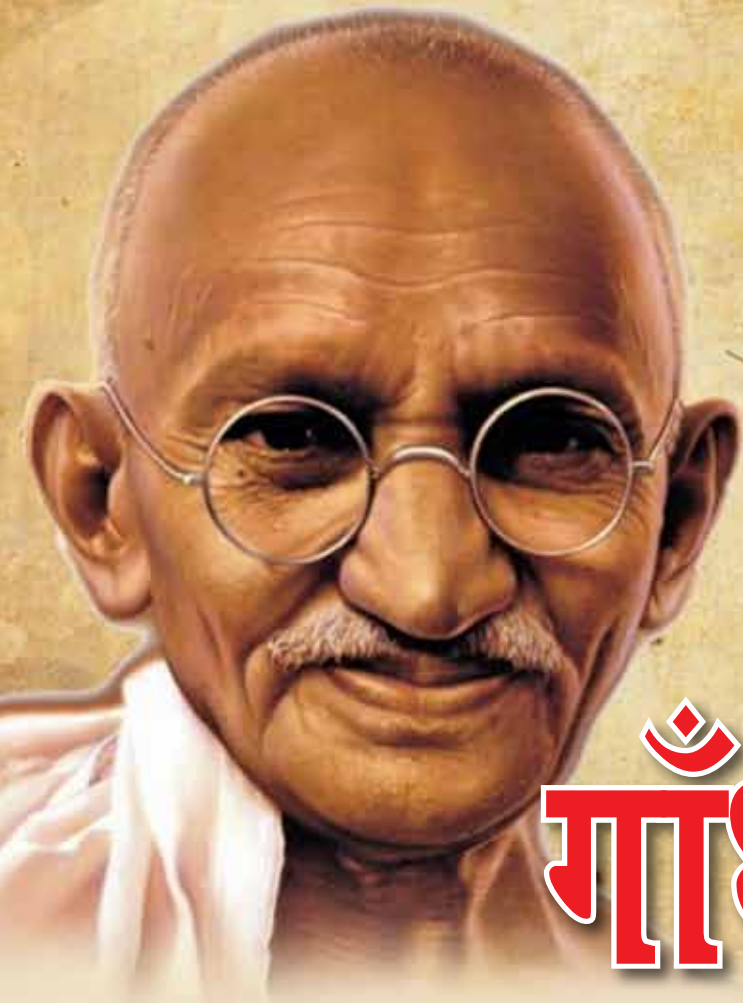
श्री सिसोदिया ने कहा कि 99 फीसदी बच्चे नौकरी के लिए पढ़ाई करते हैं। सारी शिक्षा व्यवस्था का ही जोर नौकरी पाने पर है। पर सवाल ये है कि आज नौकरी देने वाले कहाँ हैं? कुछ स्कूलों में आन्ट्रप्रनर्शिप के प्रोग्राम



शिक्षा निदेशालय के शिक्षक के संकायों को शामिल किया जाए। इस ग्रुप के सदस्यों को यह अधिकार होगा कि वह अन्य विशेषज्ञों की सेवाओं को एक साथ लेकर आएंगे और एससीईआरटी के मानदंडों के अनुसार उनके पारिश्रमिक का भुगतान करेंगे।

इस उद्यमिता पाठ्यक्रम के तहत हावभाव से जुड़ी बातें, व्यक्तित्व विकास, कौशल विकास, संचार कौशल, अंग्रेजी बोलना, किसी विदेशी भाषा का ज्ञान, व्यवसाय योजना, व्यापार रणनीति, विपणन, बिक्री और व्यापार संचालन, वास्तविक व्यवसायों की स्थापित प्रथाओं, उद्यम की शुरुआत आदि से जुड़ी बातों को रोचक कहानियों और विभिन्न गतिविधियों के जरिये बताया जाएगा।

चलाए जा रहे हैं, लेकिन उनका मकसद कुछ स्किल देना है न कि बच्चों में उद्यमी बनने का हौसला पैदा करना। इसलिए ऐसे माइंडसेट वालों की कमी है जो लोगों को नौकरी देना चाहते हैं। नतीजा ये है कि हमारे देश की बेहतरीन प्रतिभाएँ विदेशी कंपनियों में चुपचाप काम कर रहे हैं। जरूरत ऐसे उद्यमी तैयार करने की है जो न केवल बेरोजगारी की समस्या का समाधान कर सकें बल्कि देश की आर्थिक तरक्की में भी योगदान दे सकें। दिल्ली सरकार का उद्यमिता पाठ्यक्रम इसी उद्देश्य को समर्पित है। एससीईआरटी इस संदर्भ में एक कांफ्रेंस आयोजित कराएगा जिसमें इस क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों और समूहों को आमंत्रित करेगा। ■



दुनिया बचेगी गाँधी के रास्ते

दुनिया में बारूदी गंध बढ़ रही है। नस्लीय और सांप्रदायिक हिंसा ने जैसे इतिहास चक्र को उलट दिया है। दूसरी तरफ़ प्रकृति दोहन ने जिस प्रदूषण को विकराल बनाया है, वह पूरी धरती के लिए संकट बन गया है। ऐसी परिस्थिति में सबको गाँधी की याद आ रही है। वे भारत के राष्ट्रपिता ही नहीं, दुनिया भर के लिए महात्मा हैं। इतिहास में बुद्ध और ईसा मसीह के बाद गाँधी ही हैं जिनकी अहिंसा और करुणा ने संपूर्ण विश्व के मानस पटल को प्रभावित किया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने गाँधी जी के जन्मदिन 2 अक्टूबर को 'विश्व अहिंसा दिवस' घोषित किया है। इस दिन सभी देशों में गाँधी जी को उनके संयम और अहिंसा के विचारों के लिए याद किया जाता है जो धरती पर स्थायी शांति के लिए जरूरी है।

गाँधी जी की ही देन है कि दुनिया भर में सरकारों के खिलाफ जनाक्रोश अहिंसक ढंग से प्रदर्शित किया जाता है और उसकी ताकत न सिर्फ़ प्रदर्शनकारी बल्कि सरकारें भी महसूस करती हैं। तमाम देशों में गाँधीजी के नाम पर सड़कें हैं, उनकी प्रतिमा लगी है और शायद ही कोई उल्लेखनीय भाषा हो जिसमें गाँधी जी के सिद्धांतों पर

आधारित किताबें उपलब्ध न हों। गाँधी के लेखन का प्रचुर मात्रा में अनुवाद हुआ है।

गाँधी जी ने लोगों को एक-दूसरे के धर्म के प्रति सम्मान का भाव प्रदर्शित करने और उसे समझने पर जोर दिया। वह मानते थे कि परस्पर संवाद में ही मनुष्य का हित है। यह सहअस्तित्व को संभव बनाता है। गाँधी जी ने शुरू से प्रकृति के अनाप-शनाप दोहन के प्रति सचेत किया था। वे कहते थे कि धरती सबकी ज़रूरत पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक की भी हवस पूरा करने की क्षमता उसके पास नहीं है। मुनाफ़े की लालच में प्रकृति के अंधाधुंध दोहन का जो नुकसान है, वह सामने है। इसीलिए गाँधी जी साध्य ही नहीं साधन की पवित्रता पर भी जोर देते थे।

गांधीजी की नजर में आधुनिकता का मतलब गलाकाट स्पर्धा से नहीं था। एक बार एक ब्रिटिश पत्रकार ने महात्मा गांधी से पूछा था कि आधुनिक सभ्यता पर आपकी सोच क्या है? गांधी का जवाब था—'मेरी नजर में यह एक अच्छा विचार है।' इस सोच के साथ गांधीजी ने पश्चिमी देशों के प्रति कभी द्वेष भाव नहीं रखा। उन्होंने अपने आदर्श के रूप में हेनरी साल्ट, जॉन रस्किन और

लेफ़ तात्सतॉय का कई बार जिक्र किया। ये तीन श्वेत थे। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जब लंदन पर बम गिराए गए थे, तब गांधीजी रोए थे। उन्होंने अपने जीवन के दो दशक (वर्ष 1893 से 1914 तक) दक्षिण अफ्रीका में बिताए, लेकिन वहां भी वकालत से ज्यादा समाजसेवा की।

गांधी जी संत थे, लेकिन लगातार राजनीति में सक्रिय रहे। अगर राजनेता उनसे सबक ले सकें तो दुनिया बहुत बेहतर हो सकती है। उन्होंने समाज के सबसे अंतिम आदमी से संवाद किया, उसी की तरह कठिन जीवन जिया, लंगोटी वाले बापू कहलाए और मंत्र दिया कि 'जब भी कुछ करो, समाज के अंतिम आदमी के जीवन पर उससे पड़ने वाले प्रभाव के बारे में सोचो।' समय की कद्र और अनुशासन की तो वे मिसाल ही थे।

गांधी से प्रेरणा लेने वालों में मार्टिन लूथर किंग जूनियर, दलाई लामा, डेसमंड टुटु या नेल्सन मंडेला जैसे लोग ही शामिल नहीं रहे हैं, क्यूबा क्रांति के नायक कहे जाने वाले क्रांतिकारी चेग्वेरा ने भी एक बार कहा था कि अगर उनके पास गांधी जैसा कोई नायक होता तो उन्हें बंदूक नहीं उठानी पड़ती।

आजादी की लड़ाई का नेतृत्व करने के बावजूद गांधी जी ने कोई पद स्वीकार नहीं किया, बल्कि जनता के बीच अपने सत्य का प्रयोग करते रहे। ऐसा दूसरे किसी देश में नहीं हुआ जहाँ आज़ादी दिलाने वाले ने सत्ता से खुद

को दूर रखा हो। जिस अंग्रेजी साम्राज्य का सूरज नहीं डूबता था, उससे मुक्ति दिलाने वाले गाँधी जी का कद किसी भी पद से बड़ा था।

आने वाली पीढ़ियों को यकीन ही नहीं होगा कि गाँधी जैसा व्यक्ति भी कभी धरती पर जन्मा था।

— अल्बर्ट आइंस्टीन, महान वैज्ञानिक

महात्मा गाँधी घोर तपश्चर्या का जीवन व्यतीत करते थे। उनके करोड़ों देशवासी उन्हें दैवी प्रेरणा प्राप्त संत मानते थे। लक्ष्य साधन में उनकी सच्चा और निष्ठा पर उँगुली नहीं उठाई जा सकती।

— विलमैंट एटली, पूर्व ब्रिटिश पीएम

महात्मा गाँधी का जीवन आदर्श है। मौजूदा विश्व के कई बड़े नेता उनके सिद्धांतों से प्रभावित हैं और अहिंसा की बात करते हैं। अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता भारत के दो खजाने हैं।

— दलाई लामा, तिब्बतियों के धार्मिक नेता

आधुनिक इतिहास में किसी भी एक व्यक्ति ने अपने चरित्र की वैयक्तिक शक्ति, ध्येय की पावनता और अंगीकृत उद्देश्य के प्रति निःस्वार्थ निष्ठा से लोगों के दिमागों पर इतना असर नहीं डाला, जितना महात्मा गांधी का असर दुनिया पर हुआ।

— फिलिप नोएल बेकर,

नोबेल पुरस्कार विजेता ब्रिटिश राजनीतिज्ञ ■





चीन के प्रतिनिधिमंडल ने समझा दिल्ली के सूचना विभाग का कामकाज

बीजिंग सरकार के प्रचार मंत्री एवं चीन कम्युनिस्ट पार्टी के नगर समिति सदस्य श्री डू फीजिन के नेतृत्व में छह सदस्यीय चीन प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली सरकार के जनसम्पर्क सचिव डॉ. जयदेव षडंगी से उनके कार्यालय में भेंट की। बैठक के दौरान प्रचार के क्षेत्र में परस्पर सहयोग और प्रशासनिक स्तर पर प्रचार को अधिक सक्षम बनाने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर व्यापक चर्चा हुई। इससे पूर्व प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली सचिवालय में दिल्ली के उपमुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया से मुलाकात की।

इस प्रतिनिधिमंडल में बीजिंग म्युनिसिपल प्रेस ब्यूरो के महानिदेशक श्री यांग शूओ, बीजिंग नगर सरकार की विदेशी मामलों के उपमहानिदेशक सुश्री जांग कयान, सी. पी.सी बीजिंग नगर समिति के प्रचार विभाग के मंडलीय प्रमुख श्री हू जिनलांग, सी.पी.सी बिजिंग नगर समिति के प्रचार विभाग के प्रभागीय प्रमुख श्री जी गोंगचेंग और

बीजिंग नगर सरकार के कार्यालय (विदेशी मामलों) के स्टाफ सदस्य श्री वांग हेशान मौजूद थे।

जनसम्पर्क सचिव ने प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष एवं सदस्यों का स्वागत कर सूचना एवं प्रचार निदेशालय के स्थापना एवं इसके दैनिक कार्यप्रणाली की जानकारी दी।

इस मुलाकात के दौरान पत्रकारों के हितों से जुड़े विभिन्न मामलों जैसे चिकित्सा सुविधा, पार्किंग सुविधा, बस-रेल यात्रा सुविधा पर व्यापक चर्चा की गई।

माननीय मंत्री श्री डू फीजिन ने कहा कि इस मुलाकात का उद्देश्य दो अन्तर्राष्ट्रीय शहरों के बीच सामाजिक सुरक्षा एवं प्रचार के क्षेत्र में परस्पर सहयोग और मैत्रीपूर्ण सम्बंधों को बढावा देना है। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति के आदान प्रदान से दो देशों के सम्बन्धों को अधिक मजबूत किया जा सकता है।



डा० षडंगी ने प्रतिनिधिमण्डल को बताया कि माननीय उच्चतम न्यायालय के सरकारी विज्ञापनों को लेकर लिए गये निर्णय और तय किये गये मापदंडों के आधार पर इस निदेशालय ने एक तयशुदा मानक प्रक्रिया अपनाई है। इस प्रक्रिया के तहत संबंधित विभाग अध्यक्ष को विज्ञापन जारी करने के लिए एक प्रमाण पत्र देने होता है जिसमें विज्ञापन की सामग्री, फोटो, विषयवस्तु और आकार के उच्चतम न्यायालय के विज्ञापन संबंधी निर्णय के अनुरूप होने की बात प्रमाणित करनी पड़ती है। इसके उपरांत ही यह निदेशालय विज्ञापन जारी करता है।

बैठक में उपस्थित सूचना एवं प्रचार निदेशालय के विशेष निदेशक श्री संदीप मिश्रा ने कहा कि इस तरह की अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों से सरकारी प्रचार तंत्र को और अधिक मजबूत किया जा सकता है।

इससे पहले निदेशालय के वरिष्ठ सूचना अधिकारी श्री कांचन आजाद ने विभाग से सम्बंधित एक पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन चीनी प्रतिनिधिमंडल को दिया। बैठक के दौरान उपस्थित दोनों सरकारों के अधिकारियों के बीच प्रशासनिक एवं प्रचार क्षेत्र से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई।

(कांचन आजाद) ■





‘दिल्ली’ नाम का राज बतलाते प्रस्तर अभिलेख

यह विश्वास किया जाता है कि दिल्ली के प्रथम मध्यकालीन नगर की स्थापना तोमरों ने की थी, जो ‘ढिल्ली’ या ‘ढिल्लिका’ कहलाती थी जबकि ज्ञात अभिलेखों में ढिल्लिका का नाम सबसे पहले राजस्थान के उदयपुर जिले में बिजोलिया के 1170 ईस्वी के अभिलेख में आता है जिसमें दिल्ली पर चौहानों के अधिकार किए जाने का उल्लेख है। राजा विग्रहराज चतुर्थ (1153–64) ने जो शाकंभरी (आज का सांभर जो कि अपनी नमक की झील के कारण प्रसिद्ध है) के चौहान वंश के बीसल देव के नाम से जाना जाता है, राज्य संभालने के तुरंत बाद शायद तोमरों से दिल्ली छीन ली थी। बिजोलिया के अभिलेख में उसके द्वारा दिल्ली पर अधिकार किए जाने का उल्लेख है जबकि अन्य अभिलेखों में दिल्ली पर तोमरों और चौहानों द्वारा क्रमशः शासन किए जाने का उल्लेख है।

एपिग्राफिया इंडिका 26 (1841–42) के अनुसार, अशोक के स्तम्भ पर अंकित ईस्वी सन् 1163 या 1164 के एक लेख में, जो इस समय कोटला फीरोजशाह में है, विन्ध्य और हिमालय के बीच की भूमि पर विग्रहराज के आधिपत्य का उल्लेख है।

ये तो दिल्ली से बाहर मिलने वाले प्रस्तर लेख प्रमाण हैं जबकि दिल्ली में ही तेरहवीं सदी का पहला एक अभिलेख जो कि पालम गांव के एक सीढ़ीदार कुएं (बावली) से मिला है, जिसमें उल्लेख है कि ढिल्ली के एक व्यक्ति ने सीढ़ीदार कुएं का निर्माण कराया था। यह अभिलेख मुलतान जिले में उच्छ से आए उद्धार (नामक व्यापारी) द्वारा (देहली से ठीक बाहर) पालम में एक बावली और एक धर्मशाला के निर्माण की बात दर्ज करता है। पंडित योगेश्वर द्वारा विक्रमी 1333 में रचित यह अभिलेख शिव और गणपति की वन्दना से आरम्भ होता है।

जहां तक पालम बावली के शिलालेख का संबंध है कुछ दशक पूर्व यह लालकिला के संग्रहालय में हुआ करता था। इतिहास के अध्ययन के हिसाब से यह शिलालेख कई दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। पहली बार इसमें ढिल्ली शब्द का उल्लेख दिल्ली के लिए हुआ है। इसके अतिरिक्त यह पहला शिलालेख है जिसमें हरियाणा क्षेत्र का उल्लेख किया गया है। जबकि किसी भी समकालीन विदेशी इतिहासकार ने कभी भी दिल्ली के आपसपास के क्षेत्र का उल्लेख हरियाणा के रूप में नहीं किया है।

बलबन के समय के पालम-बावली अभिलेख तिथि 1272 ईस्वी (विक्रम संवत् 1333) में लिखा है कि हरियाणा पर पहले तोमरों ने तथा बाद में चौहान ने शासन किया। अब यह शक शासकों के अधीन है। यह अभिलेख देहली और हरियाणा के राजाओं को तोमर, चौहान और शक बतलाता है, इनमें से पहले दो को राजपूत वंश माना गया है तथा अंतिम से अभिप्राय सुल्तान है। यह बात शकों की एक विस्तृत सूची अर्थात् तब तक के शासक बलबन समेत देहली के सुल्तानों की एक सूची से स्पष्ट कर दी गई है।

यह अभिलेख कहता है कि सबसे पहले तोमरों का हरियाणा की भूमि पर स्वामित्व था, उसके बाद चौहानों का तथा बाद में शकों का हुआ। शिलालेख की सूची से पता चलता है कि शक शब्द का प्रयोग दिल्ली के पूर्व सुल्तानों मुहम्मद गोरी से बलबन तक के लिए होता है। बलबन सहित गुलाम वंश के सभी शासकों को यहां पर शक शासक की संज्ञा दी गई है। यहां शहर का नाम दिल्लीपुरा दिया गया है जिसका वैकल्पिक नाम योगिनीपुरा भी कहा गया है। योगिनीपुर



पालम बावली के अभिलेख में दिल्ली के वैकल्पिक नाम के रूप में आता है जिसमें पालम्ब गांव का भी उल्लेख है, स्पष्ट है कि यह आधुनिक पालम का नाम है। दिल्ली और योगिनीपुर, ये दोनों नाम जैन पट्टावलियों में बार-बार आते हैं।

“जनरल ऑफ दि एपिग्राफिक सोसाइटी ऑफ बंगाल” भाग 43 (1874) के अनुसार, 1276 ईस्वी के पालम बावली के अभिलेख में, जो गयासुद्दीन बलबन के शासन काल में लिखा गया था, नगर का नाम दिल्ली बताया गया है और जिस प्रदेश में यह स्थित है, उसे हरिनायक कहा गया है।

ऐसा लगता है कि इस अभिलेख का रचियता दिल्ली को हरियाणा मानता है। यह इस नाम का क्षेत्र के लिए आरंभिक उपयोग है। इससे पहले शायद इसका उल्लेख मिनहाज सिराज की “तबाकत ए नासिरी”, जो कि 1259–60 में पूरी हुई, में मिलता है। एक अन्य तत्कालीन कवि श्रीधर ने 1132 ईस्वी में “पार्श्वनाथ चरित्र” पुस्तक में भी दिल्लीपुरी का बखान किया है। उन दिनों यह दिल्ली हरियाणा का ही हिस्सा था। पालम का यह संस्कृत अभिलेख यही दर्शाता है।

उपर्युक्त वर्णन जैसा वर्णन सरबन शिलालेख में भी मिलता है जिसकी तिथि 1327 ईस्वी (विक्रम संवत् 1384) अंकित है। मुहम्मद बिन तुगलक के काल का यह अभिलेख दिल्ली शहर के पांच मील दक्षिण में अवस्थित सरबन नामक गांव से मिला है। उसमें भी हरियाना देश में दिल्ली नगर होने का उल्लेख है।

प्रायः सौ वर्ष पूर्व तक रायसीना के इस इलाके को सरबन नाम से ही जाना जाता था। यही इन्द्रप्रस्थ तथा दिल्ली के अंतर को प्रकट करता है।

दिल्ली को हरियाणा के एक नगर के रूप में वर्णित किया गया है। यह संस्कृत अभिलेख इस समय लाल किले के संग्रहालय में मौजूद है। इस अभिलेख में स्वयं इस गांव का इन्द्रप्रस्थ के जिले (प्रतिगण) में स्थित होने का उल्लेख है। इसी तरह, राजस्थान के डीडवाना के लाडनू में पाए गए 1316 ईस्वी के एक प्रसिद्ध लेख में हरीतान प्रदेश में दिल्ली नगर के होने का उल्लेख है। स्पष्ट है कि दिल्ली एक महत्वपूर्ण नगर था और शायद यह हरियाणा की राजधानी भी था। आधुनिक अंग्रेजी डेहली नाम दिहली या दिल्ली से निकला है, जो अभिलेखों के दिल्ली का साम्य है।

पालम के संस्कृत अभिलेख में बलबन को नायक श्री हम्मीर गयासदीन नृपति सम्राट कहा गया है और उसकी विजयों का वर्णन अतिशयोक्ति भरी प्रशंसा के साथ किया गया है। उसकी उपाधियों में नए और पुराने का मिश्रण है। नायक तो पहले की एक उपाधि है तथा हम्मीर को अमीर का संस्कृत रूप माना गया है। पहले जैसी प्रशस्ति की परम्परा में बलबन के राज को लगभग उपमहाद्वीप—व्यापी कहा गया है जो स्पष्ट रूप से अतिशयोक्ति है।

इस अभिलेख में वंशावली की परम्परागत शैली में उस व्यापारी के परिवार का खासा विस्तृत इतिहास दिया गया है। स्पष्ट है कि वह पर्याप्त धन-दौलत वाला व्यक्ति था। दूसरे स्रोत हमें बतलाते हैं कि मुल्तान के हिन्दू व्यापारी बलबन के अमीरों (कुलीनों) को, जब भी उनकी राजस्व वसूली में कोई कमी होती थी, कर्ज देते रहते थे। सुल्तान की पहचान पहले के कालों की निरन्तरता में दिखाया गया है तथा व्यापारी की पहचान उसके अपने इतिहास और व्यवसाय के आधार पर और सम्भवतः सुल्तान के अकथित संरक्षण के आधार पर दिखाई गई है। धर्म का एकमात्र जिक्र भी टेढ़े ढंग से किया गया है, यह कहकर कि सम्भवतः बलबन के शासन के कारण, विष्णु भी शान्ति की नींद सोते हैं।

इस शिलालेख के अध्ययन से बलबन की छवि उसकी प्रचलित छवि से भिन्न उजागर होती है। इतिहासकारों के अनुसार बलबन बहुत ही निर्दयी और कट्टर शासक था जिसने मेवात क्षेत्र के हिन्दुओं का तलवार के जोर से धर्मांतरण किया लेकिन इस लेख के लेखक ने उसे हिन्दू प्रजा का पालक बताया है। इसका यह कारण भी हो सकता है कि जिस व्यापारी ने पालम गांव में उस समय मंदिर और कुएं का निर्माण किया

था वह बलबन पर आश्रित रहा हो। इसलिए शिलालेख के लेखक ने तत्कालीन शासक को प्रसन्न करने के लिए उसकी प्रशंसा की हो। इस लेखक से एक बात और सिद्ध होती है कि मुस्लिम शासन को दिल्ली में स्थापित हुए हालांकि दो सौ साल गुजर चुके थे मगर जनसाधारण में संस्कृत और नागरी भाषा का प्रचलन था। यह लेख संस्कृत भाषा और नागरी लिपि में है। सबसे रोचक बात तो यह है कि उस समय तक राजपूतों की राजकीय मुद्रा, जो कि देहलीवाल कहलाती थी, उसका दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में प्रचलन था।

इस अभिलेख में वंशावली की परम्परागत शैली में उस व्यापारी के परिवार का खासा विस्तृत इतिहास दिया गया है। स्पष्ट है कि वह पर्याप्त धन-दौलत वाला व्यक्ति था। दूसरे स्रोत हमें बतलाते हैं कि मुल्तान के हिन्दू व्यापारी बलबन के अमीरों (कुलीनों) को, जब भी उनकी राजस्व वसूली में कोई कमी होती थी, कर्ज देते रहते थे। सुल्तान की पहचान पहले के कालों की निरन्तरता में दिखाया गया है तथा व्यापारी की पहचान उसके अपने इतिहास और व्यवसाय के आधार पर और सम्भवतः सुल्तान के अकथित संरक्षण के आधार पर दिखाई गई है। धर्म का एकमात्र जिक्र भी टेढ़े ढंग से किया गया है, यह कहकर कि सम्भवतः बलबन के शासन के कारण, विष्णु भी शान्ति की नींद सोते हैं।

इस प्रसिद्ध अभिलेख में काले पत्थर पर संस्कृत भाषा की नागरी लिपि में 31 पंक्तियां उत्कीर्ण हैं। यह पत्थर 19 इंच लंबा और 3.10 इंच चौड़ा है। अब इस प्रस्तर अभिलेख के दाहिनी तरफ का ऊपरी भाग टूटा हुआ है और स्वस्ति का पहला अक्षर पवित्र उच्चारण ओम के साथ गायब है। पहली और अंतिम दूसरी पंक्तियों में अनेक शब्द अनमेल हैं। इस अभिलेख में वर्ण विन्यास की कुछ विलक्षणताएं दिखती हैं। वर्तमान अभिलेख के अंत में तीन श्लोक हैं पर उनका पाठ काफी क्षतिग्रस्त है और जैसे वे हैं, उस रूप में श्लोकों की भाषा स्पष्ट नहीं है या पहचानी नहीं जा सकती है। हालांकि इतिहासकार आर.एल. मित्रा ने उसे राजपूताना हिंदी के रूप में वर्गीकृत किया है। पर एक अन्य इतिहासकार वोजल का मानना है कि मित्रा यह बूझने में विफल रहे हैं कि वह किस लिपि में लिखा गया है। अभिलेख का एक भाग नागरी में नहीं बल्कि शारदा

लिपि में लिखा गया है। ऐसा माना जाता है कि यह लिपि (शारदा) कश्मीर और उससे सटे पंजाब के पहाड़ी जिलों में व्यापक रूप से प्रयोग में लाई जाती थी। ऐसा लगता है कि शारदा गुरुमुखी के अक्षर इस क्षेत्र में भी इस्तेमाल किए जाते थे।

(नलिन चौहान) ■



राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर निदेशालय में संगोष्ठी

मीडिया को संतुलित एवं आत्मनियामक होना चाहिए –डॉ. षडंगी

भारत में 1966 में प्रेस कौंसिल ऑफ़ इंडिया की स्थापना की स्मृति में हर साल 16 नवंबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। यह दिन प्रेस की आजादी तथा समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियों का प्रतीक है। परिषद का मकसद था देश में प्रेस की आजादी को बचाए-बनाए रखने और पत्रकारिता के उच्च मापदंडों की रक्षा में मदद करना। प्रेस समाज का वह दर्पण होता है जो लोगों को सच और झूठ का आईना दिखाता है। इसलिए जरूरी है कि मीडिया हमेशा किसी भी तथ्य को बिना तोड़े-मरोड़े लोगों के सामने रखे। डिजिटल युग में पत्रकारों पर निष्पक्षता बनाए रखने की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

इन्हीं चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर 16 नवम्बर, 2018 को सूचना एवं प्रचार निदेशालय में 'डिजिटल युग में पत्रकारिता की नैतिकता एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक महत्वपूर्ण संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकारों एवं निदेशालय के अधिकारियों ने हिस्सा लिया। जनसंपर्क सचिव डॉ. जयदेव षडंगी के मार्गदर्शन में निदेशालय में पहली बार ऐसी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर निदेशालय के विशेष निदेशक श्री संदीप मिश्रा, दिल्ली प्रेस एक्रिडेशन कमिटी के चेयरमैन श्री शरद शर्मा, पूर्व चेयरमैन श्री अनिरुद्ध शर्मा, एशियन एज के सहायक संपादक श्री प्रमोद कुमार, हिन्द न्यूज़ के संपादक श्री अब्दुल माजीद, डॉ पंकज श्रीवास्तव के अतिरिक्त निदेशालय के उप निदेशक श्री नलिन चौहान, सूचना अधिकारी श्री कंचन आज़ाद ने अपने विचार एवं अनुभव प्रकट किए।

जनसंपर्क सचिव डॉ जयदेव षडंगी ने सेमिनार के लिए अपना मूल्यवान समय देने के लिए प्रतिभागियों का स्वागत किया और सोशल मीडिया पर अपने महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित विचार प्रकट किए। उन्होंने बताया कि डिजिटल मीडिया ने विचारों को प्रसारित करने के लिए गति प्रदान की है जिसके फलस्वरूप मीडिया आज बहुत प्रतिस्पर्धी हो गया है। डॉ. षडंगी ने इस बात पर जोर दिया कि डिजिटल मीडिया का उपयोग निष्पक्ष एवं संतुलित खबरों के लिए होना चाहिए न कि निजी विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए। तात्पर्य यह कि मीडिया को संतुलित, नैतिक, निष्पक्ष और आत्मनियामक (सेल्फ रेग्युलेटरी) होना चाहिए जिससे कि खबरों की विश्वसनीयता बरकरार रह सके।

(अमित कुमार) ■

घर बैठे लीजिए डीटीसी बस पास

दिल्ली सरकार ने बस से सफर करने वाले लोगों को तोहफा देते हुए डीटीसी बस पास बनने की प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया है। अब डीटीसी बस पास बनवाने के लिए लोगों को लंबी कतारों में नहीं लगना पड़ेगा। इस सेवा के शुरू होने से डीटीसी बस पास के लिए घर बैठे आवेदन किया जा सकेगा। आवेदन की प्रक्रिया पूरी होने पर आवेदक का बस पास ऑनलाइन फार्म में दिये गये पते पर 5 कार्य दिवसों के भीतर वितरित किया जाएगा।

दिल्ली सरकार के परिवहन मंत्री श्री कैलाश गहलोत ने दिल्ली सचिवालय में ऑनलाइन डीटीसी बस पास सुविधा का उद्घाटन किया। इस अवसर पर परिवहन आयुक्त श्रीमती वर्षा जोशी, दिल्ली परिवहन निगम के प्रबंध-निदेशक श्री मनोज कुमार के अलावा परिवहन विभाग और दिल्ली परिवहन निगम के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

ऑनलाइन डीटीसी बस पास सेवा के अन्तर्गत डीटीसी की एयरपोर्ट एक्सप्रेस सेवा सहित एसी और नॉन एसी बसों के सामान्य सभी रूटों और दिल्ली एनसीआर के गुरुग्राम, फरीदाबाद, बहादुरगढ़ और गाजियाबाद रूटों के पास बनवाए जा सकते हैं।

सेवा के पहले चरण में सामान्य बस पास ऑनलाइन माध्यम से बनेंगे और उनकी होम डिलीवरी होगी। आने वाले दिनों में सेवा का विस्तार कर रियायती दरों के पास जोकि दिल्ली सरकार द्वारा दिव्यांग, बुजुर्ग, छात्रों व अन्य को दिये जाते हैं उनको भी इस सेवा से जोड़ दिया जाएगा।

ऑनलाइन बस पास प्राप्त करने के लिए कहीं से भी www.dtcpass.delhi.gov.in पर आवेदन किया जा सकता



है। आवेदक को अपने नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि आदि भरना होगा और पोर्टल पर फोटो उपलोड करना होगा। यह सेवा 24 घंटे चालू रहेगी।

डेबिट/क्रेडिट कार्ड और नेट बैंकिंग के माध्यम से बस पास के लिए भुगतान किया जा सकता है। बस पास के लिए किये गये भुगतान की पुष्टि से संबंधित विवरण के लिए आवेदक को एक एसएमएस और ई-मेल भेजा जाएगा। इस सेवा के अन्तर्गत आवेदक को www.indiapost.gov.in पर बस पास के वितरण से सम्बन्धित जानाकारी प्राप्त करने की भी सुविधा दी गई है।

परिवहन मंत्री ने बताया कि डीटीसी बस पास को रद्द करने के लिए आवेदक को किसी भी दिल्ली परिवहन निगम के पास सेक्शन में मूल बस पास जमा करना होगा और धनवापसी की राशि आवेदक के बैंक खात में जमा हो जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस सेवा के शुरू होने से मानव शक्ति की बचत के साथ-साथ बुनियादी ढांचे की लागत में भी बचत आएगी।

(गोविन्द) ■

न्यूनतम मजदूरी की गारंटी के लिए चला 'ऑपरेशन मिनिमज वेज'

श्रम विभाग की प्रवर्तन टीम ने 10 दिन तक 'ऑपरेशन मिनिमज वेज' के तहत अभियान चलाया। ऑपरेशन मिनिमज वेज का मुख्य उद्देश्य था कि दिल्ली के लोगों को हर हाल में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी मिले। दिल्ली सरकार के श्रम विभाग को लगातार यह शिकायत मिल रही थी कि कुछ सरकारी एवं प्राइवेट संस्थानों में काम करने वाले कर्मचारियों को न्यूनतम मजदूरी नहीं दी जा रही है।



जिन संस्थानों में अनियमितता पाई गई है उसकी जाँच श्रम विभाग के संबंधित उपश्रमायुक्त कार्यालय में होगी। जिन कंपनी के कामकाज में अनियमितता पाई गई है उनके खिलाफ न्यूनतम मजदूरी कानून के तहत कार्यवाही की जाएगी।

अनियमितता को देखते हुए चार कंपनियों के खिलाफ एफ.आई. आर. दर्ज कराई गई है। ये हैं—

- पंडित मदनमोहन मालवीय हास्पिटल में काम करने वाली कंपनी मैसर्स ग्लोबल इंटरप्राइजेज।
- राव तुला राम अस्पताल में काम करने वाली कंपनी मैसर्स जी.ए. डिजीटल वेव वर्ड प्राइवेट लि. और ओरियन सिक्योरिटी साल्यूसन प्राइवेट लि.।
- गुरु गोविन्द सिंह हॉस्पिटल में काम करने वाली कंपनी मैसर्स गुरु जी एलीवेटर।

दिल्ली के श्रम मंत्री श्री गोपाल राय ने बताया कि श्रम विभाग की प्रवर्तन टीम ने ऑपरेशन मिनिमज वेज के तहत कुल 182 संस्थानों की जाँच की इनमें से 165 संस्थानों में जाँच के दौरान अनियमितता पाई गई है। संस्थाओं में अनियमितता मुख्य रूप से हाउस कीपिंग, सिक्यूरिटी, नर्सिंग अर्दली इत्यादि के काम करने वाली कंपनी में देखने को मिली।

श्रम मंत्री श्री गोपाल राय ने श्रम विभाग की प्रवर्तन टीम के साथ जाकर खुद इन 9 संस्थानों की जाँच की:—

1. संजय गांधी मेमोरियल हॉस्पिटल
2. फोर्टिस हास्पिटल
3. मदनमोहन मालवीय हास्पिटल
4. लाल बहादुर शास्त्री हास्पिटल, खिचड़ी पुर
5. राव तुलाराम मेमोरियल हॉस्पिटल
6. चौ. ब्रह्म प्रकाश आयुर्वेद संस्थान
7. ताज होटल
8. जी टी बी हॉस्पिटल
9. आई एस बी टी

दिल्ली के श्रम मंत्री श्री गोपाल राय ने श्रम विभाग को आदेश दिया है कि वह दिल्ली सरकार के सभी विभाग के प्रमुखों को एडवाइजरी जारी करे कि वे यह सुनिश्चित करें कि विभागों में कार्यरत कम्पनियों में काम करने वाले कर्मचारियों को न्यूनतम मजदूरी मिले। अगर इसमें कोई शिकायत मिलते हैं तो सम्बंधित अधिकारी इसके लिए जिम्मेदार होंगे।

दिल्ली में काम करने वाले सभी संस्थानों/कंपनियों से सरकार ने अपील की है कि अपने तहत काम करने वाले लोगों को न्यूनतम मजदूरी दें।

(चंदन कुमार) ■



जीवन को सार्थक बनाती हैं गुरु नानक की शिक्षाएँ

गुरु नानक का 550वाँ प्रकाशवर्ष पूरी दुनिया में वैश्विक भाईचारा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। दिल्ली सरकार की ओर से भी इस सिलसिले में तमाम आयोजन किए गए। दिल्ली विधानसभा में गुरु नानक के जीवन पर आधारित एक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई जिसे देखने के लिए आम जनता और स्कूली बच्चे बड़ी तादाद में पहुँचे। इस अवसर पर प्रस्तुत है गुरु नानक के जीवन और शिक्षाओं पर आधारित एक लेख—

गुरु नानक देव जी सिखों के पहले गुरु थे। अंधविश्वास और आडंबरों के कष्टर विरोधी गुरु नानक का प्रकाश उत्सव (जन्मदिन) कार्तिक पूर्णिमा को मनाया जाता है। उनका जन्म 15 अप्रैल 1469 को हुआ था। गुरु नानक पंजाब के तलवंडी नामक स्थान पर एक किसान परिवार में जन्मे थे। उनके मस्तक पर शुरु से ही तेज आभा थी। तलवंडी जो कि अब पाकिस्तान में लाहौर से 30 मील पश्चिम में स्थित है, गुरु नानक का नाम साथ जुड़ने के





बाद आगे चलकर ननकाना कहलाया। गुरु नानक के प्रकाश उत्सव पर प्रति वर्ष भारत से सिख श्रद्धालुओं का जत्था ननकाना साहिब जाकर वहां अरदास करता है।

गुरु नानक का बचपन

गुरु नानक बचपन से ही गंभीर प्रवृत्ति के थे। जब उनके साथी खेल कूद में व्यस्त होते थे तो वह अपने नेत्र बंद कर चिंतन-मनन में खो जाते थे। यह देख उनके पिता कालू एवं माता तुप्ता चिंतित रहते थे। उनके पिता ने पंडित हरदयाल के पास उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा, लेकिन पंडितजी बालक नानक के प्रश्नों पर निरुत्तर हो जाते थे और उनके ज्ञान को देखकर समझ गए कि यह विलक्षण बालक है। नानक को मौलवी कुतुबुद्दीन के पास पढ़ने के लिए भेजा गया लेकिन वह भी नानक के प्रश्नों से निरुत्तर हो गए। बाद में गुरु नानक ने घर-बार छोड़ दिया और दूर-दूर के देशों का भ्रमण किया जिससे उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने में उन्हें बड़ी सहायता मिली। अंत में उन्होंने 'निर्गुण उपासना' का प्रचार प्रारंभ किया और सिख संप्रदाय के आदिगुरु हुए।

गुरु नानक का परिवार

गुरु नानक जी का विवाह सन 1485 में बटाला निवासी कन्या सुलक्खनी से हुआ। उनके दो पुत्र श्रीचन्द और

लक्ष्मीचन्द थे। गुरु नानक के पिता ने उन्हें कृषि, व्यापार आदि में लगाना चाहा किन्तु यह सारे प्रयास नाकाम साबित हुए। उनके पिता ने उन्हें घोड़ों का व्यापार करने के लिए जो राशि दी, नानक जी ने उसे साधु सेवा में लगा दिया। कुछ समय बाद नानक जी अपने बहनोई के पास सुल्तानपुर चले गये। वहां वे सुल्तानपुर के गवर्नर दौलत खां के यहां मोदी रख लिये गये। वे अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ करते थे और जो भी आय होती थी उसका ज्यादातर हिस्सा साधुओं और गरीबों को दे देते थे।

परमात्मा ने पिलाया अमृत

सिख ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि गुरु नानक नित्य बेई नदी में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन वे स्नान करने के पश्चात वन में अन्तर्धान हो गये। उस समय उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। परमात्मा ने उन्हें अमृत पिलाया और कहा—मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ, जो तुम्हारे सम्पर्क में आयेंगे वे भी आनन्दित होंगे। जाओ दान दो, उपासना करो, स्वयं नाम लो और दूसरों से भी नाम स्मरण कराओ। इस घटना के पश्चात वे अपने परिवार का भार अपने श्वसुर को सौंपकर विचरण करने निकल पड़े और धर्म का प्रचार करने लगे। उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही विदेशों की भी यात्राएं कीं और जन





सेवा का उपदेश दिया। बाद में वे करतारपुर में बस गये और 1521 ई. से 1539 ई. तक वहीं रहे।

लंगर की शुरुआत

गुरु नानक देवजी ने जात-पांत को समाप्त करने और सभी को समान दृष्टि से देखने की दिशा में कदम उठाते हुए 'लंगर' की प्रथा शुरू की थी। लंगर में सब छोटे-बड़े, अमीर-गरीब एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। आज भी गुरुद्वारों में उसी लंगर की व्यवस्था चल रही है, जहां हर समय हर किसी को भोजन उपलब्ध होता है। इस में सेवा और भक्ति का भाव मुख्य होता है। नानकदेव जी का जन्मदिन गुरु पूर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती हैं। जगह-जगह भक्त लोग पानी और शरबत आदि की व्यवस्था करते हैं। गुरु नानक जी का महाप्रयाण सन 1539 ई. में हुआ। इन्होंने गुरुगद्दी का भार गुरु अंगददेव (बाबा लहना) को सौंप दिया और स्वयं करतारपुर में 'ज्योति लीन' हो गए।

गुरु नानक के उपदेश

गुरु नानक जी ने अपने अनुयायियों को दस उपदेश दिए जो कि सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे। गुरु नानक जी की शिक्षा का मूल निचोड़ यही है कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है। मूर्ति-पूजा आदि निरर्थक है। नाम-स्मरण सर्वोपरि तत्त्व

है और नाम गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत-प्रोत है। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएं दीं जो इस प्रकार हैं—

1. ईश्वर एक है।
2. सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो।
3. ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है।
4. ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता।
5. ईमानदारी से और मेहनत करके उदरपूर्ति करनी चाहिए।
6. बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएँ।
7. सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए।
8. मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से ज़रूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए।
9. सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं।
10. भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ-लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है।

(शुभा दुबे) ■





दिल्ली बनेगा झीलों का शहर

पानी की किल्लत के लिए मशहूर देश की राजधानी दिल्ली आने वालों दिनों में लबालब झीलों की तस्वीर से पहचानी जाएगी। सरकार ने एक महात्वाकांक्षी योजना के तहत 159 झीलों के विकास की मंजूरी दी है। माना जा रहा है कि इस परियोजना से दिल्ली का नक्शा बदल जाएगा। पर्यटकों और नागरिकों को नए पिकनिक स्पॉट मिलेंगे।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अध्यक्षता में हुई दिल्ली जल बोर्ड की बैठक में राजधानी में 376 करोड़ की लागत से 159 झीलों के विकास योजना को मंजूरी दी गई। इन झीलों में बरसात का पानी एकत्रित किया जा सकेगा। साथ ही सीवरेज शोधन संयंत्रों से उपचारित पानी को भी इनमें एकत्रित किया जा सकेगा। इन झीलों में भूजल रिचार्ज की सुविधा होगी। इसलिए इन झीलों के विकास की यह परियोजना दिल्ली के गिरते भूजल स्तर को सुधार करने में मददगार साबित होगी।

जल बोर्ड के अनुसार मुख्यमंत्री ने दिल्ली में 200 जलाशयों के पुनर्विकास का निर्देश दिया है। इस क्रम में ही 159 जलाशयों को झील के रूप में विकसित करने की योजना को मंजूरी दी गई है। ये झील 350 एकड़ क्षेत्र में फैली

होंगी। जिनकी क्षमता 1581 मिलियन लीटर पानी भंडारण की होगी। इन झीलों का विकास वैज्ञानिक तरीके से होगा। ताकि वर्षा का पानी आसानी से उन तक पहुंच सके।

जल बोर्ड के अनुसार इस योजना के तहत रोहिणी और निलोटी में दो बड़ी झीलों का निर्माण होगा। रोहिणी में 32 एकड़ जमीन पर कृत्रिम झील तैयार की जाएगी। इस पर 53.8 करोड़ खर्च होगा। इसके अलावा निलोटी में 25 एकड़ जमीन पर भी झील का निर्माण किया जाएगा। इसके निर्माण पर 23.5 करोड़ रुपया खर्च होगा। रोहिणी व निलोटी सीवरेज शोधन संयंत्रों से उपचारित पानी का भंडारण उनमें किया जाएगा। इसके अलावा नजफगढ़ में 23 एकड़ में, द्वारका में सात एकड़ जमीन में झील का निर्माण किया जाएगा। इसके अलावा तिमारपुर में 45 एकड़ जमीन में झील का निर्माण किया जाना है।

जल बोर्ड का कहना है कि ये झीलें पिकनिक स्पॉट के तौर पर विकसित की जाएंगी। रोहिणी व निलोटी झील का निर्माण 15 माह में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। सिंचाई व बाढ़ नियंत्रण विभाग को भी 29 झीलों के विकास की जिम्मेदारी दी गई है। ■

Welcome to Doorstep Delivery of
Public Services

Govt. of NCT of Delhi

24x7 Call Centre

1076



डोर स्टेप डिलीवरी में 60 नई सुविधाएँ

दिल्ली के नागरिकों को घर बैठे तमाम सेवाएँ देने की क्रांतिकारी योजना 'डोरस्टेप डिलीवरी' परवान चढ़ रही है। 40 सेवाओं के साथ शुरू की गई इस योजना में अब साठ सेवाएँ और जोड़ दी गई हैं। दिल्ली सरकार ने इस योजना को प्रभावी बनाने के लिए कॉल एकजीविवटिव की संख्या भी बढ़ाकर 600 कर दी है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निर्देश पर यह सेवा शुरू की गई थी जिसकी काफी सराहना हो रही है। लोगों को विभिन्न विभागों के प्रमाणपत्र घर बैठे मिल रहे हैं। मोबाइल सहायक घर आकर लोगों के फार्म भरवाते हैं और फिर उन्हें डाक से प्रमाणपत्र भेज दिया जाता है। इस सेवा के जरिए दिल्ली में मोबाइल सहायक की तरफ से किसी भी विभाग में सबमिट किए गए मामलों में से कोई भी मामला संबंधित मंत्री की मंजूरी के बिना रिजेक्ट नहीं किया जा सकता। सेवा को शुरू करने के पीछे सरकार का मानना है कि कई मामलों में निचले स्तर पर

24x7
कॉल सेंटर
डोर स्टेप डिलीवरी का टेलीफोन नम्बर
1076

रिश्वत के लिए आवेदनों को खारिज कर दिया जाता है या उनमें देरी की जाती है। इस योजना को भ्रष्टाचार रोकने का बड़ा जरिया माना जा रहा है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल खुद डोर स्टेप डिलीवरी ऑफ सर्विसेज योजना की निगरानी कर रहे हैं।

लोगों को मिलने वाली राहत को देखते हुए आने वाले दिनों में इस सुविधा का और विस्तार किया जा सकता है। ■

दिल्ली में दौड़ेंगी एक हजार इलेक्ट्रिक बसें



दिल्ली में प्रदूषण स्तर को लेकर पूरी दुनिया में चिंता जताई जाती है। सरकार इसे कम करने के तमाम उपाय कर रही है। इसी क्रम में अब ऐसी दिल्ली की कल्पना की गई है जहाँ बसें पेट्रोल या डीजल से नहीं, बिजली के दम पर चलें। यानी न धुआँ और न शोर। दिल्ली में जल्दी ही ऐसी एक हजार बसें दौड़ती नजर आएँगी।

एनडीएमसी कन्वेंशन सेटर में 'दिल्ली डायलॉग और डेवलपमेंट कमीशन' द्वारा 'दिल्ली इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी 2018' पर सुझावों के लिए आयोजित परिचर्चा को

संबोधित करते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि एक साथ एक हजार इलेक्ट्रिक बसें लाने वाला दिल्ली देश का पहला राज्य होगा। उन्होंने कहा कि प्रदूषण दिल्ली की बड़ी समस्या बन चुका है। अगर सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मजबूत किया जाए तो लोग निजी वाहनों को छोड़कर इसका उपयोग करेंगे। इससे प्रदूषण में कमी लाई जा सकेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली डायलॉग और डेवलपमेंट कमीशन का यह कदम तारीफ योग्य है। उसने इलेक्ट्रिक व्हीकल उपयोग करने वाले दूसरे देशों व



देश के अन्य राज्यों के प्रयोग का अध्ययन किया है। एक साल के भीतर दिल्ली इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी 2018 को तैयार किया गया है। प्रदूषण से निपटने के लिए इलेक्ट्रिक व्हीकल का प्रयोग समय की मांग है। अब इस दिशा में सभी को मिलकर काम करना है। दिल्ली सरकार सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मजबूत करने के लिए कार्य कर रही है। इसके तहत कुल तीन हजार बसें लाई जा रही है। इसमें एक हजार बसें इलेक्ट्रिक होंगी।

उन्होंने इलेक्ट्रिक व्हीकल के विशेषज्ञों से अपील की कि वह इस पर विचार और सुझाव दें ताकि इस नीति को सही ढंग से लागू करने में सरकार को मदद मिले। उन्होंने इलेक्ट्रिक व्हीकल निर्माताओं से इसकी तकनीक किफायती करने के लिए भी कहा। उन्होंने कहा कि बस की कीमत की आधी राशि सिर्फ बैटरी सिस्टम पर खर्च होती है, इसलिए इससे जुड़े उद्योगों को इस पर और शोध करने की जरूरत है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार इसको बढ़ावा देने के लिए सरकार कुछ समय के लिए

सब्सिडी जरूर दे सकती है, लेकिन यह स्थायी समाधान नहीं है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर इन एक हजार बसों का अनुभव अच्छा रहा तो भविष्य में दिल्ली की सारी बसों को इलेक्ट्रिक में बदलने का काम किया जाएगा।

इस मौके पर परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने कहा कि सरकार इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी को सही ढंग से लागू करने पर तेजी से कार्य कर रही है। सरकार की सबसे बड़ी चुनौती बसों के लिए चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार इसको बढ़ावा देने के लिए सरकार कुछ समय के लिए सब्सिडी जरूर दे सकती है, लेकिन यह स्थायी समाधान नहीं है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर इन एक हजार बसों का अनुभव अच्छा रहा तो भविष्य में दिल्ली की सारी बसों को इलेक्ट्रिक में बदलने का काम किया जाएगा। इस मौके पर परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने कहा कि सरकार इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी को सही ढंग से लागू करने पर तेजी से कार्य कर रही है। सरकार की सबसे बड़ी चुनौती बसों के लिए चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने की है

इस अवसर पर आइआइटी मद्रास के प्रोफेसर अशोक झुनझुनवाला ने दिल्ली सरकार की इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी की सराहना करते हुए कहा कि देश में किसी और राज्य ने इतनी बेहतर पॉलिसी नहीं बनाई है। इसमें हर पहलू पर ध्यान दिया गया है।

सरकार इस नीति पर तेजी से काम कर रही है। कुछ इलेक्ट्रिक बसें दिल्ली की सड़कों पर नज़र भी आने लगी हैं। ■

सूचना एवं प्रचार निदेशालय ने 'सुशासन में मीडिया की भूमिका एवं चुनौतियाँ' विषय पर प्रशिक्षण और उद्बोधन कार्यक्रम का किया आयोजन

सुशासन के लिए मीडिया और सरकार में तालमेल आवश्यक: डॉ. जयदेव षडंगी

सोशल मीडिया की बढ़ती भूमिका और फर्जी खबरों (फेक न्यूज़) के कारण मीडिया के बदलते चरित्र पर गहन चर्चा

'मीडिया और सरकार की भूमिका एक दूसरे के पूरक की है जबकि सुशासन, जबाबदेही, पारदर्शिता, समानता और उत्तरदायी होनेके साथ प्रभावी तथा सक्षम राजकाज का प्रतीक है। इन सभी मापदंडों पर सरकारी कामकाज खरा उतरता रहे, इसमें मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है।' – पायनियर के प्रधान संपादक एवं राज्य सभा के पूर्व सांसद श्री चंदन मित्रा ने यह बात 26 दिसंबर 2018 को सूचना एवं प्रचार निदेशालय की ओर से 'सुशासन में मीडिया की भूमिका एवं चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित एक प्रशिक्षण और उद्बोधन कार्यक्रम में कही।

परिचर्चा में भाग लेते हुए एशियन न्यूज़ इंटरनेशनल (ANI) के संपादक श्री अजय कौल ने सोशल मीडिया

की बढ़ती भूमिका और उसमें आने वाली फर्जी खबरों (फेक न्यूज़) के कारण मीडिया के बदलते चरित्र को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता खासकर प्रिंट मीडिया के लिए फेक न्यूज़ सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। फेक न्यूज़ के नाम पर मनचाहे ढंग से सम्पादित वीडियो / ऑडियो / लिखित सन्देशों की बाढ़ आ गई है। समाचार योग्य सामग्री का चयन बड़ा दुष्कर हो गया है। अंग्रेजी पत्रिका आउटलुक के संपादक श्री रुबेन बनर्जी ने पत्रकारों को बाज़ार और प्रबंध के दबावों का सामना करते हुए समाचार संकलन और प्रकाशन में पूरी निष्पक्षता बरतने की सलाह दी। जबकि एशियन एज के ब्यूरो चीफ श्री संजय बसाक ने कहा कि मीडिया को



सरकारी कामकाज के बेहतरी के लिए उसकी निष्पक्ष समीक्षा करनी चाहिए, तभी उसको लेकर सही बात जनता के सामने आ पायेगी।

जनसंपर्क सचिव डॉ. जयदेव षड़ंगी ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले DPAC के सदस्यों सहित अन्य प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए मीडियाकर्मियों से निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ तरीके से सरकार की योजनाओं एवं नीतिगत फैसलों की खबरों को जनता के सामने रखने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि निष्पक्ष रिपोर्टिंग से ही मीडिया की विश्वसनीयता कायम होगी। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं की समीक्षा में मीडिया की अहम् भूमिका है। मीडिया घरानों को सरकार की सामाजिक और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में नागरिकों को जिम्मेदाराना तरीके से जानकारी देनी चाहिए, जिससे नागरिक सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हो सकें।

विशेष निदेशक श्री संदीप मिश्रा ने कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद देते हुए कहा कि सरकार

की कल्याणकारी योजनाओं को जनसाधारण तक पहुंचाने में मीडिया की सार्थक भूमिका है। ऐसे में मीडिया को इस दिशा में ऐसे कार्य करना चाहिए, जिससे समाज

डॉ. जयदेव षड़ंगी ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले DPAC के सदस्यों सहित अन्य प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए मीडियाकर्मियों से निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ तरीके से सरकार की योजनाओं एवं नीतिगत फैसलों की खबरों को जनता के सामने रखने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि निष्पक्ष रिपोर्टिंग से ही मीडिया की विश्वसनीयता कायम होगी। सरकार की योजनाओं की समीक्षा में मीडिया की अहम् भूमिका है।

और सरकार का भला होगा। इस कार्यक्रम के बातचीत सत्र में उप निदेशक श्री नलिन चौहान, वरिष्ठ सूचना अधिकारी श्री कंचन आज़ाद, संपादक, दिल्ली मासिक डॉ. पंकज श्रीवास्तव सहित मीडिया से आये अन्य प्रतिभागियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। निदेशालय के अधिकारी श्री चंदन कुमार, श्री अमित कुमार, श्री मनीष कुमार, श्रीमती उर्मिला बेनीवाल और श्री गोविंद ने भी कार्यक्रम के संचालन में योगदान दिया।

सूचना एवं निदेशालय ने एक नई परंपरा की शुरुआत की है जिसके तहत नियमित रूप से

इस प्रकार के संगोष्ठी/व्याख्यान/उद्बोधन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य निदेशालय के तकनीकी अधिकारियों के कामकाज की गुणवत्ता और कौशल को बढ़ाना है।

(अमित कुमार) ■

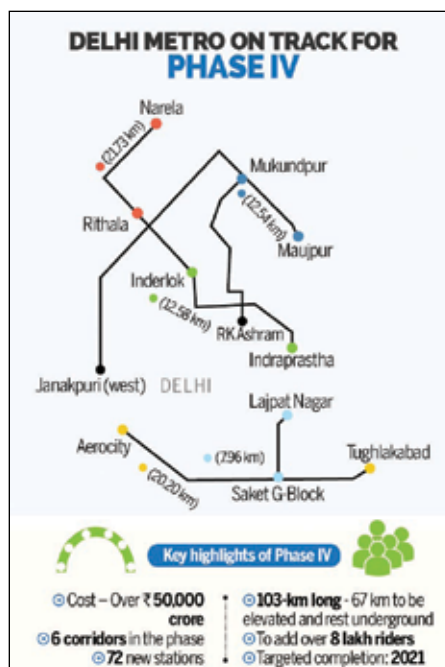




मेट्रो के चौथे फ़ेज़ को मंजूरी

दिल्ली के निवासियों के लिए खुशख़बरी है। सरकार ने मेट्रो के चौथे फेज के निर्माण को मंजूरी दे दी है। इस फेज में 103 किलोमीटर के दायरे में 79 नए स्टेशन बनाए जाएंगे। इस प्रोजेक्ट में 6 लाइनें होंगी। इनमें रिठाला से नरेला, जनकपुरी वेस्ट-आर के पुरम, मुकुंदपुर-मौजपुर, इंद्रलोक-इंद्रप्रस्थ, एरोसिटी-तुगलकाबाद और लाजपत नगर-साकेत जी ब्लॉक होंगी।

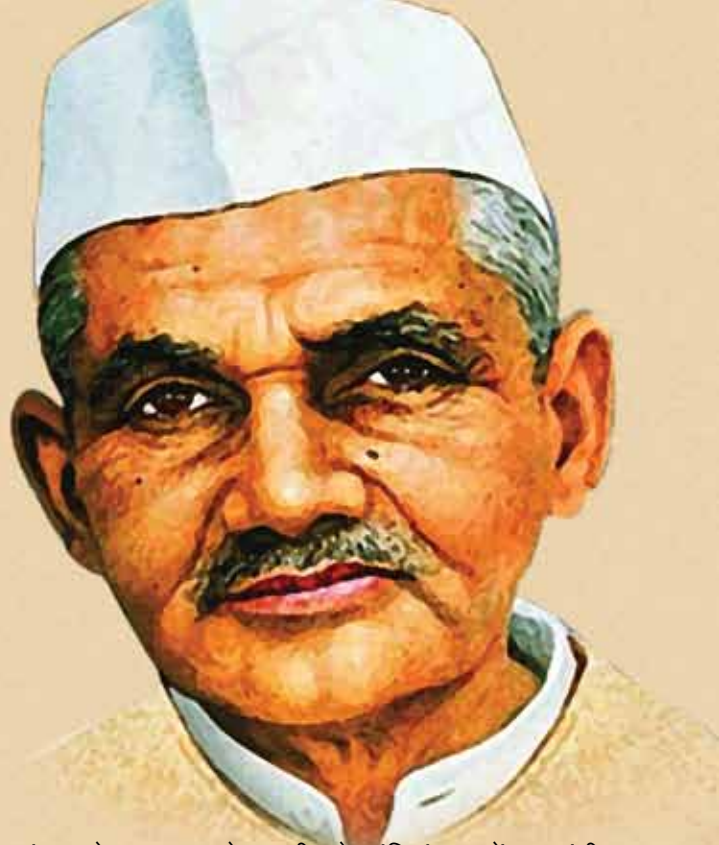
मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में यह मंजूरी दी गई। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा है कि इससे राष्ट्रीय राजधानी में सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा मिलेगा। इस परियोजना पर करीब 45,000 करोड़ रुपये का खर्च आने का अनुमान है।



मेट्रो के चौथे चरण की परियोजनाओं में रिठाला से नरेला (21.73 किमी), वेस्ट जनकपुरी से आरके आश्रम (28.92 किमी), मुकुंदपुर से मौजपुर (12.54 किमी), इंद्रलोक से इंद्रप्रस्थ (12.58 किमी), तुगलकाबाद से एरोसिटी (20.20 किमी) और लाजपत नगर से साकेत जी ब्लॉक (7.96 किमी) शामिल हैं।

फैसले के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट किया—‘दिल्ली के लिए खुशख़बरी। शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी में क्रांतिकारी सुधार के बाद अब ट्रांसपोर्ट में बड़े पैमाने पर सुधार होंगे। इससे प्रदूषण भी कम होगा। मेरा सपना है कि दिल्ली दुनिया के चुनिंदा शहरों में गिना जाए। हर दिल्लीवासी को—चाहे अमीर हो या ग़रीब—अपनी दिल्ली पर गर्व हो।’

सच्चे गाँधीवादी थे शास्त्री जी



‘जय जवान—जय किसान’ का नारा देने वाले वाले भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म वाराणसी के करीब रामनगर में 2 अक्टूबर 1904 को हुआ। उनके पिता मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे और बाद में राजस्व विभाग में क्लर्क हो गए थे। उनकी माँ का नाम रामदुलारी था।

शास्त्री जी का बचपन बहुत अभावों में बीता। वे बस 18 महीने के थे तो पिता की मृत्यु हो गई। उसके बाद ननिहाल मिर्जापुर में उनका काफी समय बीता। पढ़ाई—लिखाई बनारस में हुई और काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि मिलने के बाद, उन्होंने जातिसूचक शब्द नाम से हटा दिया और हमेशा के लिए लालबहादुर शास्त्री हो गए। वे स्कूल के दिनों में ही आज़ादी के आंदोलन में शामिल हो गए थे।

शास्त्रीजी सच्चे गांधीवादी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं।

शास्त्रीजी के राजनीतिक दिग्दर्शकों में पुरुषोत्तमदास टंडन और पण्डित गोविंद बल्लभ पंत के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। सबसे पहले 1929 में इलाहाबाद आने के बाद उन्होंने टण्डनजी के साथ भारत सेवक संघ की इलाहाबाद इकाई के सचिव के रूप में काम करना शुरू किया।

इलाहाबाद में रहते हुए ही नेहरूजी के साथ उनकी निकटता बढ़ी। इसके बाद तो शास्त्रीजी का कद निरंतर बढ़ता ही चला गया और एक के बाद एक सफलता की

सीढ़ियां चढ़ते हुए वह नेहरूजी के मंत्रिमंडल में गृहमंत्री के प्रमुख पद तक जा पहुंचे।

1961 में गृह मंत्री के प्रभावशाली पद पर नियुक्ति के बाद उन्हें एक कुशल मध्यस्थ के रूप में प्रतिष्ठा मिली। तीन साल बाद जवाहरलाल नेहरू के बीमार पड़ने पर उन्हें बिना किसी विभाग का मंत्री नियुक्त किया गया और नेहरू की मृत्यु के बाद जून 1964 में वह भारत के प्रधानमंत्री बने।

उन्होंने अपने प्रथम संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि उनकी पहली प्राथमिकता खाद्यान्न मूल्यों को बढ़ने से रोकना है और वे ऐसा करने में सफल भी रहे। उनके क्रियाकलाप सैद्धांतिक न होकर पूरी तरह से व्यावहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थी। निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो शास्त्रीजी का शासन काल बेहद कठिन रहा।

भारत की आर्थिक समस्याओं से प्रभावी ढंग से न निपट पाने के कारण शास्त्री जी की आलोचना भी हुई, लेकिन जम्मू—कश्मीर के विवादित प्रांत पर पड़ोसी पाकिस्तान के साथ 1965 में हुए युद्ध में उनके द्वारा दिखाई गई दृढ़ता के लिए उनकी बहुत प्रशंसा हुई।

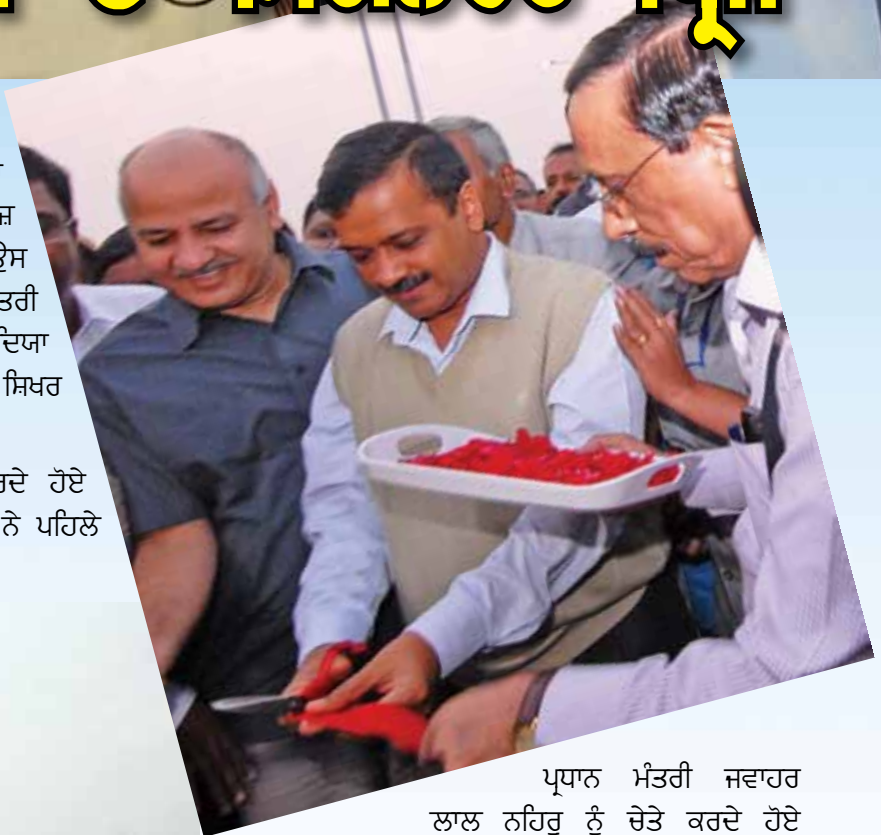
ताशकंद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्ध न करने की ताशकंद घोषणा के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। शास्त्रीजी को उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिए आज भी पूरा भारत श्रद्धापूर्वक याद करता है। उन्हें मरणोपरान्त वर्ष 1966 में भारतरत्न से भी सम्मानित किया गया। ■



ਨਮਸਤੇ। ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਸਿਗਨੇਚਰ ਬ੍ਰਿਜ

ਨਮਸਤੇ। ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਸਿਗਨੇਚਰ ਬ੍ਰਿਜ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਵੱਲੋਂ ਦਸਾਂ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਅਭਿਵਾਦਨ ਕਰਦਾ ਨਜ਼ਰ ਆਉਣ ਲਗਾ ਹੈ। ਕਰੀਬ 14 ਸਾਲ ਦੇ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਦੇ ਬਾਅਦ ਇਹ ਘੜੀ ਆਈ ਜਦ ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ ਉਸ ਦੀ ਨਵੀਂ ਪਹਿਚਾਨ ਮਿਲੀ। 4 ਨਵੰਬਰ ਨੂੰ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਇਸ ਪੁਲ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕੀਤਾ। ਪੁਲ ਦਾ ਸ਼ਿਖਰ ਕੁਤੁਬਮੀਨਾਰ ਤੋਂ ਦੋਗੁਣੀ ਉਚਾਈ ਦਾ ਹੈ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਪੁਲ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਸ ਨੂੰ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਨਵੀਂ ਤਸਵੀਰ ਦੱਸਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪਹਿਲੇ



ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਜਵਾਹਰ ਲਾਲ ਨਹਿਰੂ ਨੂੰ ਚੇਤੇ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਮੰਦਿਰ-ਮਸਜਿਦ ਦੀ ਨਹੀਂ ਐਸੇ ਹੀ ਉਸਾਰੂ ਕੰਮਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ।

ਯਮੁਨਾ ਨਦੀ ਤੇ ਬਣੇ ਇਸ ਬ੍ਰਿਜ ਨਾਲ ਉਤਰ ਅਤੇ ਉਤਰ-ਪੂਰਬੀ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਸਫਰ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਬਚਤ ਹੋਵੇਗੀ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ, ਵਜ਼ੀਰਾਬਾਦ ਪੁਲ ਦੇ ਉਪਰ ਟ੍ਰੈਫਿਕ ਦਾ ਭਾਰ ਵੀ ਘਟ ਹੋਵੇਗਾ।





ਪੈਰਿਸ ਦੇ ਏਫਿਲ ਟਾਵਰ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਿਗਨੇਚਰ ਬ੍ਰਿਜ ਦੇ ਟਾਪ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਸੁੰਦਰ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਦੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕੇਗਾ। ਟਾਪ ਤੇ ਲੈ ਜਾਣ ਦੇ ਲਈ ਇਸ ਬ੍ਰਿਜ ਵਿਚ ਚਾਰ ਐਲੀਵੇਟਰ ਵੀ ਲਗਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਹਰ ਲਿਫਟ ਵਿਚ ਤੇ 50 ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਲੋਕ ਉਪਰ ਜਾ ਸਕਣਗੇ।

ਇਹ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਕੇਬਲ ਸਟਾਇਲ ਬ੍ਰਿਜ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਪੜਾਅ ਵਿਚ ਇਸ ਬ੍ਰਿਜ ਨੂੰ ਸੈਰ ਸਪਾਟਾ ਜਗ੍ਹਾ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਵਿਕਸਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਔਨ ਲੇਨ ਵਾਲਾ 575 ਮੀਟਰ ਲੰਬਾ ਬ੍ਰਿਜ ਗਾਂਜੀਆਬਾਦ ਅਤੇ ਲੋਨੀ ਜਾਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦਾ ਘੱਟ ਤੋਂ ਘੱਟ ਅੱਧਾ ਘੰਟਾ ਸਮਾਂ ਬਚਾਏਗਾ। ਟ੍ਰੈਫਿਕ ਜਾਮ ਤੋਂ ਕਾਫੀ ਹਦ ਤਕ ਛੁਟਕਾਰਾ ਮਿਲ ਸਕੇਗਾ।

ਸਿਗਨੇਚਰ ਬ੍ਰਿਜ ਦੇ ਮੁੱਖ ਪਿਲਰ ਦੀ ਉਚਾਈ 154 ਮੀਟਰ ਹੈ। ਬ੍ਰਿਜ ਤੇ 19 ਸਟੇ ਕੇਬਲਸ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਬ੍ਰਿਜ ਦਾ 350 ਮੀਟਰ ਹਿਸਾ ਬਗੈਰ ਕਿਸੇ ਪਿਲਰ ਦੇ ਰੋਕਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਿਲਰ ਦੇ ਉਪਰੀ ਹਿਸੇ ਵਿਚ ਚਾਰੇ ਪਾਸੇ ਸ਼ੀਸ਼ੇ ਲਗਾਏ ਗਏ ਹਨ। ਇਹ ਬ੍ਰਿਜ ਅਰਥ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਤੇਜ਼ੀ ਦੇਵੇਗਾ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਦੇ ਖਣ ਦੇ ਲਈ ਨਾ ਸਿਰਫ ਐਨਸੀਆਰ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਭਰ ਤੋਂ ਬਲਕਿ ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਤੋਂ ਲੋਕ ਆਉਣਗੇ।

ਇਸ ਬ੍ਰਿਜ ਦੀ ਉਸਾਰੀ ਕਾਮਨਵੈਲਥ ਖੇਡਾਂ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਪੂਰਾ ਕਰ ਲਈ ਜਾਣੀ ਸੀ, ਪਰ ਕੰਮ ਨੂੰ ਤੇਜ਼ੀ ਮਿਲੀ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕੇ ਜਰੀਵਾਲ ਸਰਕਾਰ ਆਉਣ ਦੇ ਬਾਅਦ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਦੀ ਉਸਾਰੀ ਪੂਰੀ ਕਰਾਉਣ ਵਿਚ ਕੋਈ ਕਸਰ ਬਾਕੀ ਨਹੀਂ ਰੱਖੀ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਲਗਾਤਾਰ ਇਸ ਪੁਲ ਦੇ ਉਸਾਰੀ ਕੰਮ ਦਾ ਜਾਇਜ਼ਾ ਲੈਂਦੇ ਰਹੇ ਅਤੇ ਰਸਤੇ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਰੁਕਾਵਟਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਜੁਟੇ ਰਹੇ। ਆਖਿਰਕਾਰ ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ ਉਸ ਦੀ ਪਹਿਚਾਨ ਹਾਸਲ ਹੋ ਗਈ। ■

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਪੁਲ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਸ ਨੂੰ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਨਵੀਂ ਤਸਵੀਰ ਦੱਸਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪਹਿਲੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਜਵਾਹਰ ਲਾਲ ਨਹਿਰੂ ਨੂੰ ਚੇਤੇ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਮੰਦਿਰ-ਮਸਜਿਦ ਦੀ ਨਹੀਂ ਐਸੇ ਹੀ ਉਸਾਰੂ ਕੰਮਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ।

ਪੈਰਿਸ ਦੇ ਏਫਿਲ ਟਾਵਰ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਿਗਨੇਚਰ ਬ੍ਰਿਜ ਦੇ ਟਾਪ ਤੇ ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਖੂਬਸੂਰਤ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਦੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕੇਗਾ। ਟਾਪ ਤੇ ਲੈਣ ਜਾਣ ਦੇ ਲਈ ਇਸ ਬ੍ਰਿਜ ਵਿਚ ਚਾਰ ਐਲੀਵੇਟਰਸ ਵੀ ਲਗਾਏ ਗਏ ਹਨ। ਹਰ ਲਿਫਟ ਵਿਚ 50 ਲੋਕ ਉਪਰ ਜਾ ਸਕਣਗੇ।





ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਚੱਲੇਗੀ ਸਫ਼ਾਈ ਦੀ ਪਾਠਸ਼ਾਲਾ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਨਿਤ ਨਵੇਂ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੇ ਲਈ ਜਾਣੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲੜੀ ਵਿਚ ਹੁਣ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸਫ਼ਾਈ ਦਾ ਸਲੇਬਸ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਸਕਤਰੇਤ ਵਿਚ ਆਯੋਜਿਤ 'ਸਵੱਛ ਵਿਦਿਆਲਯ ਪੁਰਸਕਾਰ' ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿਚ ਇਸ ਦਾ ਐਲਾਨ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਨਾਲ ਬੱਚੇ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਸਫ਼ਾਈ ਵਿਚ ਭਾਗੀਦਾਰ ਬਣ ਸਕਣਗੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸਫ਼ਾਈ ਕਰਨ ਦੀ ਆਦਤ ਵੀ ਵਿਕਸਿਤ ਹੋਵੇਗੀ।

ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਹੁਣ ਤਕ ਦੇ ਮਾਡਲ ਵਿਚ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਗੰਦਗੀ ਅਤੇ ਫੈਲਣ ਵਾਲਾ ਕੂੜੇ ਵਿਚ ਬੱਚੇ ਵੀ ਭਾਗੀਦਾਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਸਫ਼ਾਈ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਭਾਗੀਦਾਰੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਹਰ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਤਕਰੀਬਨ ਤਿੰਨ ਤੋਂ ਚਾਰ ਹਜ਼ਾਰ ਬੱਚੇ ਅਤੇ ਅਧਿਆਪਕ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਥੇ ਗੰਦਗੀ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਸਾਫ਼ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਅਲਗ ਤੋਂ ਸਫ਼ਾਈ ਕਰਮਚਾਰੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਸਫ਼ਾਈ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਕੋਈ ਜਵਾਬਦੇਹੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸਫ਼ਾਈ ਕਰਨ ਦੀ ਵੀ ਆਦਤ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਹੋਵੇ। ਇਸ ਮਕਸਦ ਨਾਲ ਇਹ ਸਲੇਬਸ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ

ਕਿਹਾ ਕਿ ਜੇਕਰ ਸਾਨੂੰ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਤਾਬਾਂ ਵਿਚ ਸਫ਼ਾਈ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਅਤੇ 'ਸਵੱਛ ਭਾਰਤ ਅਭਿਆਨ' ਚਲਾਉਣ ਨਾਲ ਇਹ ਸਭ ਠੀਕ ਹੋ ਜਾਏਗਾ, ਤਾਂ ਯਕੀਨ ਮੰਨੋ ਕਦੇ ਵੀ, ਕੁਝ ਵੀ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਕਈ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਐਸਾ ਮਾਡਲ ਦੇਖਿਆ ਹੈ ਜਿਥੇ ਬੱਚੇ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸਫ਼ਾਈ ਵਿਚ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਭਾਗੀਦਾਰੀ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਝਾੜੂ-ਪੋਚਾ ਲਗਾਉਣ, ਡੇਸਕ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਸਾਫ਼ ਕਰਨ ਤੇ ਪੇੜ-ਪੋਦਿਆਂ ਨੂੰ ਪਾਣੀ ਦੇਣ ਤਕ ਦੇ ਕੰਮ ਵਿਚ ਆਪਣੀ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਇਥੋਂ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਕੋਈ ਮਾਡਲ ਵਿਕਸਿਤ ਹੋਵੇ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਸਿਲੇਬਸ ਐਕਟਵਿਟੀ ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਅਲਗ ਨਾਲ ਕੋਈ ਪੀਰਿਅਡ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ। ਅਲਗ ਨਾਲ ਕੋਈ ਕਿਤਾਬ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲਾਂ, ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਬੱਚਿਆਂ ਤੋਂ ਇਸ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਸੁਝਾਅ ਮੰਗਿਆ ਹੈ। ਸੁਝਾਅ ਵਿਚ ਇਹ ਦਸਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਸਿਲੇਬਸ ਨੂੰ ਵਿਕਸਿਤ ਕਰਨ ਵਿਚ ਕੀ-ਕੀ ਕਾਰਗੁਜ਼ਾਰੀਆਂ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਕੀ-ਕੀ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਸ਼ਾਮਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਣੀਆਂ

ਚਾਹੀਦੀਆਂ। ■



ਹੁਣ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਚੋਂ ਨਿਕਲਣਗੇ ਕਾਰੋਬਾਰੀ, ਸੱਤ ਲੱਖ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਪੜ੍ਹਨਗੇ ਕਾਰੋਬਾਰ ਦਾ ਪਾਠ

ਅਗਲੇ ਸੈਸ਼ਨ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹ ਰਹੇ 9ਵੀਂ ਤੋਂ 12ਵੀਂ ਦੇ ਸੱਤ ਲੱਖ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਕਾਰੋਬਾਰੀ ਗਿਆਨ ਵੀ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਕਾਰੋਬਾਰ ਸਿਲੇਬਸ ਤਿਆਰ ਕਰਾਇਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਨੂੰ ਅਪ੍ਰੈਲ 2019 ਵਿਚ ਬਤੌਰ ਪਾਯਲਟ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜੁਲਾਈ 2019 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਤੋਂ ਲਾਗੂ ਹੋ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਦੁਆਰਾ ਜਾਰੀ ਅਵਧਾਰਨਾ ਨੋਟ ਦੇ ਤਹਿਤ ਸਿਲੇਬਸ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ 9ਵੀਂ ਤੋਂ 12ਵੀਂ ਜਮਾਤ ਦੇ ਸੱਤ ਲੱਖ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਇਕ ਘੰਟੇ ਦੀਆਂ ਜਮਾਤਾਂ ਲਗਣਗੀਆਂ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਦਸ ਹਜ਼ਾਰ ਟਰੇਨਰ ਜਮਾਤਾਂ ਲੈਣਗੇ।

ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਟੀਚਾ ਹੈ ਕਿ 2019 ਦੀ ਮਈ-ਜੂਨ ਦੀਆਂ ਗਰਮੀਆਂ ਦੀਆਂ ਛੁੱਟੀਆਂ ਵਿਚ ਇਸ ਸਲੇਬਸ ਦੀ ਮੂਲ ਟਰੇਨਿੰਗ

ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਅਨੁਸੰਧਾਨ ਅਤੇ ਟਰੇ ਨਿੰਗ ਰਾਜ ਪਰਿਸ਼ਦ (ਐਸਸੀਈਆਰਟੀ), ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਨੂੰ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਕ ਵਰਕਿੰਗ ਗਰੁਪ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕਰਨ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਐਸਸੀਈਆਰਟੀ, ਜ਼ਿਲਾ ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਟਰੇ ਨਿੰਗ ਸੰਸਥਾਨ (ਡਾਯਟ), ਸਿੱਖਿਆ ਨਿਦੇਸ਼ਾਲਯ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ ਫੈਕਲਿਟੀ ਨੂੰ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤਾ ਜਾਏ। ਇਸ ਗਰੁਪ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਮਾਹਿਰਾਂ ਦੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠੇ ਲੈ ਕੇ ਆਉਣਗੇ ਅਤੇ ਐਸਸੀਈਆਰਟੀ ਦੇ ਮਾਨਦੰਡਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਿਹਨਤਾਨੇ ਦਾ ਭੁਗਤਾਨ ਕਰਨਗੇ।

ਪੂਰੀ ਕਰ ਲਈ ਜਾਏ। ਇਸ ਵਿਚ 9ਵੀਂ ਤੋਂ 12ਵੀਂ ਜਮਾਤ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਦੋ ਗਰੁਪ ਵਿਚ ਵੰਡਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਤਹਿਤ 9ਵੀਂ ਤੇ 10ਵੀਂ ਜਮਾਤ ਨੂੰ ਜੂਨੀਅਰ ਹਾਈ ਸਕੂਲ ਅਤੇ 11ਵੀਂ ਤੇ 12ਵੀਂ ਜਮਾਤ ਨੂੰ ਸੀਨੀਅਰ ਹਾਈ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਵੰਡਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਦੋਵੇਂ ਗਰੁਪ ਦੇ ਲਈ ਕਾਰੋਬਾਰ ਸਲੇਬਸ ਨੂੰ ਵਿਦਿਅਕ ਸੈਸਨ 2019-20 ਵਿਚ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ।

ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਅਨੁਸੰਧਾਨ ਅਤੇ ਟਰੇਨਿੰਗ ਰਾਜ ਪਰਿਸ਼ਦ (ਐਸਸੀਈਆਰਟੀ), ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਨੂੰ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਕ ਵਰਕਿੰਗ ਗਰੁਪ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕਰਨ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਐਸਸੀਈਆਰਟੀ, ਜ਼ਿਲਾ ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਟਰੇਨਿੰਗ ਸੰਸਥਾਨ (ਡਾਯਟ), ਸਿੱਖਿਆ ਨਿਦੇਸ਼ਾਲਯ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ

ਇਸ ਕਾਰੋਬਾਰ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਜਾਂ 'ਆਨਟ੍ਰਪ੍ਰਨਸ਼ਿਪ ਕੈਰਿਕੁਲਮ' ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਸਮੱਸਿਆ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਐਸੀ ਸਿੱਖਿਆ ਨਹੀਂ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਜਿਸ ਨਾਲ ਲੋਕ ਖੁਦ ਦਾ ਵਪਾਰ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਸਕਣ। ਚੌਥੀ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਦੀ ਨੌਕਰੀ ਦੇ ਲਈ ਵੀ ਐਮਬੀਏ, ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਪੀਐਚਡੀ ਸਟੂਡੈਂਟ ਤਕ ਦਰਖਾਸਤ ਕਰ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।

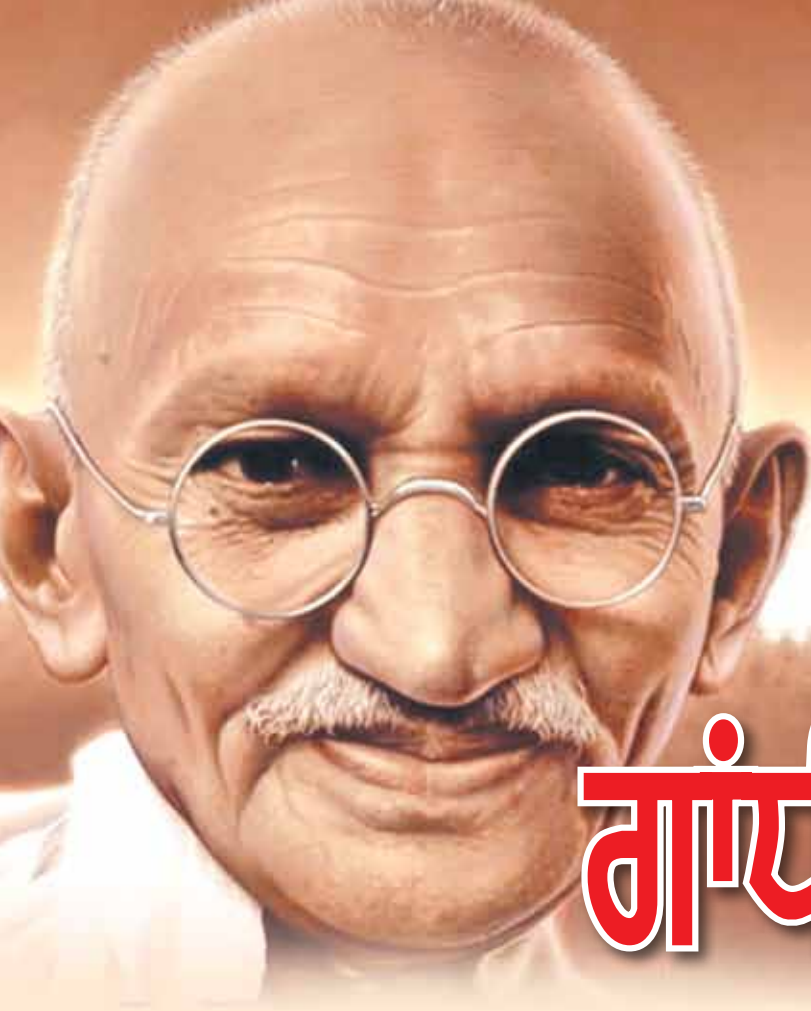
ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ 99 ਫੀਸਦੀ ਬੱਚੇ ਨੌਕਰੀ ਦੇ ਲਈ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਸਾਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਦਾ ਹੀ ਜੋਰ ਨੌਕਰੀ ਹਾਂਸਲ ਕਰਨ ਤੇ ਹੈ। ਪਰ ਸਵਾਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਅੱਜ ਨੌਕਰੀ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਕਿਥੇ ਹਨ? ਕੁਝ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਆਨਟ੍ਰਪ੍ਰਨਸ਼ਿਪ



ਫੈਕਲਟੀ ਨੂੰ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤਾ ਜਾਏ। ਇਸ ਗਰੁਪ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਹੋਰ ਮਾਹਿਰਾਂ ਦੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠੇ ਲੈ ਕੇ ਆਉਣਗੇ ਅਤੇ ਐਸਸੀਈਆਰਟੀ ਦੇ ਮਾਨਦੰਡਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਿਹਨਤਾਨੇ ਦਾ ਭੁਗਤਾਨ ਕਰਨਗੇ।

ਇਸ ਕਾਰੋਬਾਰ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਦੇ ਤਹਿਤ ਹਾਵਭਾਵ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਗੱਲਾਂ, ਵਿਅਕਤੀਤਵ ਵਿਕਾਸ, ਕੌਸ਼ਲ ਵਿਕਾਸ, ਸੰਚਾਰ ਕੌਸ਼ਲ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਬੋਲਣਾ, ਕਿਸੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਗਿਆਨ, ਵਿਵਸਾਏ ਯੋਜਨਾ, ਵਪਾਰ ਰਣਨੀਤੀ, ਵਿਪਨਣ, ਵਿਕਰੀ ਅਤੇ ਵਪਾਰ ਸੰਚਾਲਨ, ਵਾਸਤਵਿਕ ਵਿਵਸਾਇਆਂ ਦੀ ਸਥਾਪਿਤ ਪ੍ਰਥਾਵਾਂ, ਕਾਰੋਬਾਰ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਆਦਿ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਨੂੰ ਰੋਚਕ ਕਹਾਣੀਆਂ ਅਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਕਾਰਗੁਜ਼ਾਰੀਆਂ ਦੇ ਜਰੀਏ ਦੱਸਿਆ ਜਾਏਗਾ।

ਦੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਚਲਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਮਕਸਦ ਕੁਝ ਸਕਿਲ ਦੇਣਾ ਹੈ ਨਾ ਕਿ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਕਾਰੋਬਾਰੀ ਬਨਾਉਣ ਦਾ ਹੌਸਲਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨਾ। ਇਸ ਲਈ ਐਸੇ ਮਾਈਡਸੈਟ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਕਮੀ ਹੈ ਜੋ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਨੌਕਰੀ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀਆਂ ਬੇਹਤਰੀਨ ਪ੍ਰਤਿਭਾਵਾਂ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਕੰਪਨੀਆਂ ਵਿਚ ਚੁਪਚਾਪ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਜ਼ਰੂਰਤ ਐਸੇ ਕਾਰੋਬਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਦੀ ਹੈ ਜੋ ਨਾ ਕੇਵਲ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰੀ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਦਾ ਹਲ ਕਰ ਸਕਣ ਬਲਕਿ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਰਥਿਕ ਤਰੱਕੀ ਵਿਚ ਵੀ ਯੋਗਦਾਨ ਦੇ ਸਕਣ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਕਾਰੋਬਾਰ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਇਸੇ ਉਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਹੈ। ਐਸਸੀਈਆਰਟੀ ਇਸ ਸੰਧਰਭ ਵਿਚ ਇਕ ਕਾਨਫਰੰਸ ਆਯੋਜਿਤ ਕਰਾਏਗਾ ਜਿਸ ਵਿਚ ਇਸ ਖੇਤਰ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਅਤੇ ਸਮੂਹਾਂ ਨੂੰ ਸੱਦਾ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ■



ਦੁਨੀਆਂ ਬਚੇਗੀ ਗਾਂਧੀ ਦੇ ਰਸਤੇ

ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਬਾਹੁਦੀ ਗੰਧ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਨਸਲੀ ਅਤੇ ਸੰਪਰਦਾਇਕ ਹਿੰਸਾ ਨੇ ਜਿਵੇਂ ਇਤਿਹਾਸ ਚੱਕਰ ਨੂੰ ਪਲਟ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਕੁਦਰਤ ਦੌਹਨ ਨੇ ਜਿਸ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਨ ਨੂੰ ਵਿਕਰਾਲ ਬਣਾਇਆ ਹੈ, ਉਹ ਪੂਰੀ ਧਰਤੀ ਦੇ ਲਈ ਸੰਕਟ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਐਸੇ ਹਲਾਤਾਂ ਵਿਚ ਸਭ ਨੂੰ ਗਾਂਧੀ ਦੀ ਯਾਦ ਆ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਹ ਭਾਰਤ ਦੇ ਰਾਸ਼ਟਰਪਿਤਾ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਦੇ ਲਈ ਮਹਾਤਮਾ ਹਨ। ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਬੁਧ ਅਤੇ ਈਸਾ ਮਸੀਹ ਦੇ ਬਾਅਦ ਗਾਂਧੀ ਹੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਅਹਿੰਸਾ ਅਤੇ ਕਰੁਣਾ ਨੇ ਪੂਰੇ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਮਨੁੱਖੀ ਪਟਲ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸੰਘ ਨੇ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਦੇ ਜਨਮਦਿਨ 2 ਅਕਤੂਬਰ ਨੂੰ 'ਵਿਸ਼ਵ ਅਹਿੰਸਾ ਦਿਵਸ' ਐਲਾਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਦਿਨ ਸਾਰੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸੰਜਮ ਅਤੇ ਅਹਿੰਸਾ ਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੇ ਲਈ ਯਾਦ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਧਰਤੀ ਤੇ ਸਥਾਈ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦੇ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਦੀ ਹੀ ਦੇਣ ਹੈ ਕਿ ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰਾਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਜਨਤਾ ਦਾ ਗੁਸਾ ਅਹਿੰਸਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਤਾਕਤ ਨਾ ਸਿਰਫ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨਕਾਰੀ ਬਲਕਿ ਸਰਕਾਰਾਂ ਵੀ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਸਾਰੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਦੇ ਨਾਮ ਤੇ ਸੜਕਾਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮੂਰਤੀ ਲਗੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ ਕੋਈ ਜ਼ਿਕਰਯੋਗ ਭਾਸ਼ਾ ਹੋਵੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਉਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਕਿਤਾਬਾਂ ਉਪਲਬਧ ਨਾ ਹੋਣ।

ਗਾਂਧੀ ਦੇ ਲੇਖਨ ਦਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਮਾਤਰਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਹੋਇਆ ਹੈ।

ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਧਰਮ ਤੇ ਪ੍ਰਤੀ ਸਨਮਾਨ ਦਾ ਭਾਵ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਿਤ ਕਰਨ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਤੇ ਜੋਰ ਦਿਤਾ। ਉਹ ਮੰਨਦੇ ਸਨ ਕਿ ਆਪਸੀ ਗਲਬਾਤ ਵਿਚ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਹਿਤ ਹੈ। ਇਹ ਆਪਣੀ ਹੋਂਦ ਨੂੰ ਸੰਭਵ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਨੇ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਕੁਦਰਤ ਦੇ ਅਨਾਪ-ਸਨਾਪ ਦੌਹਨ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਚੌਕਸ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਉਹ ਕਹਿੰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਧਰਤੀ ਸਭ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਪੂਰੀ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਕਿਸੇ ਇਕ ਦੀ ਵੀ ਹਵਾਸ ਪੂਰ ਕਰਨ ਦੀ ਸਮਰਥਾ ਉਸ ਦੇ ਕੋਲ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮੁਨਾਫੇ ਦੇ ਲਾਲਚ ਵਿਚ ਕੁਦਰਤ ਦੇ ਅੰਧਾਧੁੰਦ ਦੌਹਨ ਦਾ ਜੋ ਨੁਕਸਾਨ ਹੈ, ਉਹ ਸਾਹਮਣੇ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਸਾਧਯ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਾਧਨ ਦੀ ਪਵਿਤਰਤਾ ਤੇ ਵੀ ਜੋਰ ਦਿੰਦੇ ਸਨ।

ਗਾਂਧੀਜੀ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿਚ ਆਧੁਨਿਕਤਾ ਦਾ ਮਤਲਬ ਗਲਾਕੱਟ ਮੁਕਾਬਲੇਬਾਜ਼ੀ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਇਕ ਵਾਰ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਪੱਤਰਕਾਰ ਨੇ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਤੋਂ ਪੁਛਿਆ ਸੀ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਸਭਿਅਤਾ ਤੇ ਤੁਹਾਡੀ ਕੀ ਸੋਚ ਹੈ? ਗਾਂਧੀ ਦਾ ਜਵਾਬ ਸੀ- 'ਮੇਰੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿਚ ਇਹ ਇਕ ਚੰਗਾ ਵਿਚਾਰ ਹੈ।' ਇਸ ਸੋਚ ਦੇ ਨਾਲ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਨੇ ਪੱਛਮੀ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਕਦੇ ਈਰਖਾ ਦਾ ਭਾਵ ਨਹੀਂ ਰਖਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਆਦਰਸ਼ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਹੇਨਰੀ ਸਾਲਟ, ਜਾਨ ਰਸਿਕਨ ਅਤੇ ਲੇਫ ਤਾਲਸਤਾਏ ਦਾ ਕਈ ਵਾਰ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ। ਇਹ ਤਿੰਨ ਸ਼ਵੇਤ ਸਨ।

ਦੂਜੇ ਵਿਸ਼ਵ ਯੁੱਧ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਜਦ ਲੰਦਨ ਤੇ ਬੰਬ ਗਿਰਾਏ ਗਏ ਸਨ, ਤਦ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਰੋਏ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਦੋ ਦਹਾਕੇ (ਸਾਲ 1893 ਤੋਂ 1914 ਤਕ) ਦੱਖਣ ਅਫਰੀਕਾ ਵਿਚ ਬਿਤਾਏ, ਲੇਕਿਨ ਉਥੇ ਵੀ ਵਕਾਲਤ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਕੀਤਾ।

ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਸੰਤ ਸਨ, ਲੇਕਿਨ ਲਗਾਤਾਰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਵਿਚ ਸਰਗਰਮ ਰਹੇ। ਜੇਕਰ ਰਾਜਨੇਤਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਸਬਕ ਲੈ ਸਕਣ ਤਾਂ ਦੁਨੀਆਂ ਬਹੁਤ ਬੇਹਤਰ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਅੰਤਮ ਆਦਮੀ ਨਾਲ ਗਲਬਾਤ ਕੀਤੀ, ਉਸੇ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਠਿਨ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਿਤਾਈ, ਲੰਗੋਟੀ ਵਾਲੇ ਬਾਪੂ ਕਹਾਏ ਅਤੇ ਮੰਤਰ ਦਿੱਤਾ ਕਿ 'ਜਦ ਵੀ ਕੁਝ ਕਰੋ, ਸਮਾਜ ਦੇ ਅੰਤਮ ਆਦਮੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਤੇ ਉਸ ਨਾਲ ਪੈਣ ਵਾਲੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਸੋਚੋ।' ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਅਤੇ ਅਨੁਸ਼ਾਸਨ ਦੀ ਤਾਂ ਉਹ ਮਿਸਾਲ ਹੀ ਸਨ।

ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਤੋਂ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਲੈਣ ਵਾਲਿਆਂ ਵਿਚ ਮਾਰਟਿਨ ਲੂਥਰ ਕਿੰਗ ਜੂਨੀਅਰ, ਦਲਾਈ ਲਾਮਾ, ਡੇਸਮੰਡ ਟੂਟ ਜਾਂ ਨੇਲਸਨ ਮੰਡੇਲਾ ਜਿਹੇ ਲੋਕ ਹੀ ਸ਼ਾਮਲ ਨਹੀਂ ਰਹੇ ਹਨ, ਕਯੂਬਾ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੇ ਨਾਇਕ ਕਹੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਚੇਗਵੇਰਾ ਨੇ ਵੀ ਇਕ ਵਾਰ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਜੇਕਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੋਲ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਜਿਹਾ ਕੋਈ ਨਾਇਕ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬੰਦੂਕ ਨਹੀਂ ਚੁਕਣੀ ਪੈਂਦੀ।

ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਲੜਾਈ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰਨ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਨੇ ਕੋਈ ਅਹੁਦਾ ਸਵੀਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ, ਬਲਕਿ ਜਨਤਾ ਦੇ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਸੱਚ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਦੇ ਰਹੇ। ਐਸਾ ਦੂਜੇ ਕਿਸੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਜਿਥੇ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦਿਵਾਉਣ ਵਾਲੇ ਨੇ ਸਤਾ ਤੋਂ ਖੁਦ ਨੂੰ ਦੂਰ ਰੱਖਿਆ ਹੋਵੇ। ਜਿਸ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਸਮਾਜ ਦਾ ਸੂਰਜ

ਨਹੀਂ ਡੁਬਦਾ ਸੀ, ਉਸ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਦਿਵਾਉਣ ਵਾਲੇ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਦਾ ਕਦ ਕਿਸੇ ਵੀ ਅਹੁਦੇ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਸੀ।

ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਨੂੰ ਯਕੀਨ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਗਾਂਧੀ ਜਿਹਾ ਵਿਅਕਤੀ ਵੀ ਕਦੇ ਧਰਤੀ ਤੇ ਜਨਮਿਆ ਸੀ।

- ਅਲਬਰਟ ਆਇੰਸਟੀਨ, ਮਹਾਨ ਵਿਗਿਆਨਕ

ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਡੂੰਘੇ ਤੱਪ ਦਾ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਰੋੜਾਂ ਦੇਸ਼ਵਾਸੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੇਵੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸੰਤ ਮੰਨਦੇ ਸਨ। ਟੀਚਾ ਸਾਧਨ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੱਚਾਈ ਅਤੇ ਨਿਸ਼ਠਾ ਉਤੇ ਉਂਗਲੀ ਨਹੀਂ ਚੁਕੀ ਜਾ ਸਕਦੀ।

- ਕਿਲਮੇਂਟ ਏਟਲੀ, ਸਾਬਕਾ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਪੀਐਮ

ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਦਾ ਜੀਵਨ ਆਦਰਸ਼ ਹੈ। ਮੌਜੂਦਾ ਵਿਸ਼ਵ ਦੇ ਕਈ ਵੱਡੇ ਨੇਤਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹਨ ਅਤੇ ਅਹਿੰਸਾ ਦੀ ਗਲ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਅਹਿੰਸਾ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਸਹਿਸ਼ਨੁਤਾ ਭਾਰਤ ਦੇ ਦੋ ਖਜ਼ਾਨੇ ਹਨ।

- ਦਲਾਈ ਲਾਮਾ, ਤਿਬਤੀਆਂ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਨੇਤਾ

ਆਧੁਨਿਕ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਵੀ ਇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਚਰਿਤਰ ਦੀ ਵਿਅਕਤੀਤਵ ਸ਼ਕਤੀ, ਲਕਸ਼ ਦੀ ਪਾਵਨਤਾ ਅਤੇ ਅੰਗੀਕ੍ਰਿਤ ਉਦੇਸ਼ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਬਿਨਾ ਸਵਾਰਥ ਨਿਸ਼ਠਾ ਨਾਲ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਦਿਮਾਗਾਂ ਤੇ ਇੰਨਾ ਅਸਰ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ, ਜਿੰਨਾ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਦਾ ਅਸਰ ਦੁਨੀਆਂ ਤੇ ਹੋਇਆ।

- ਫਿਲਿਪ ਨੋਇਲ ਬੇਕਰ,

ਨੋਬੇਲ ਪੁਰਸਕਾਰ ਵਿਜੇਤਾ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਰਾਜਨੀਤਿਗ



ਘਰ ਬੈਠੇ ਲਓ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਬਸ 'ਤੇ ਸਫਰ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਤੋਹਫਾ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ ਬਨਾਉਣ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਨੂੰ ਆਨਲਾਈਨ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ ਬਨਵਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਲੰਬੀਆਂ ਲਾਈਨਾਂ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਲੱਗਣਾ ਪਏਗਾ। ਇਸ ਸੇਵਾ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦੇ ਹੀ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ ਦੇ ਲਈ ਘਰ ਬੈਠੇ ਆਵੇਦਨ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕੇਗਾ। ਆਵੇਦਨ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਪੂਰੀ ਹੋਣ 'ਤੇ ਆਵੇਦਕ ਦਾ ਬਸ ਪਾਸ ਆਨਲਾਈਨ ਫਾਰਮ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਪਤੇ ਤੇ 5 ਕੰਮ ਵਾਲੇ ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਵੰਡ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਪਰਿਵਹਨ ਮੰਤਰੀ ਸ੍ਰੀ ਕੈਲਾਸ਼ ਗਹਲੋਟ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਸਕਤਰੇਤ ਵਿਚ ਆਨਲਾਈਨ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ ਸੁਵਿਧਾ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਪਰਿਵਹਨ ਕਮਿਸ਼ਨ ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਵਰਸ਼ਾ ਜੋਸ਼ੀ, ਦਿੱਲੀ ਪਰਿਵਹਨ ਨਿਗਮ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ-ਨਿਦੇ ਸ਼ਕ ਸ਼੍ਰੀ ਮਨੋਜ ਕੁਮਾਰ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਪਰਿਵਹਨ ਵਿਭਾਗ ਅਤੇ ਦਿੱਲੀ ਪਰਿਵਹਨ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਸੀਨੀਅਰ ਅਧਿਕਾਰੀ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਸਨ।

ਆਨਲਾਈਨ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ ਸੇਵਾ ਦੇ ਤਹਿਤ ਡੀਟੀਸੀ ਦੀ ਏਅਰਪੋਰਟ ਐਕਸਪ੍ਰੈਸ ਸੇਵਾ ਸਮੇਤ ਏਸੀ ਅਤੇ ਨਾਨ ਏਸੀ ਬੱਸਾਂ ਦੇ ਸਾਧਾਰਨ ਸਾਰੇ ਰੂਟਾਂ ਅਤੇ ਦਿੱਲੀ ਐਨਸੀਆਰ ਦੇ ਗੁਰੂਗ੍ਰਾਮ, ਫਰੀਦਾਬਾਦ, ਬਹਾਦੁਰਗੜ੍ਹ ਅਤੇ ਗਾਜੀਆਬਾਦ ਰੂਟਾਂ ਦੇ ਕੋਲ ਬਨਵਾਏ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਸੇਵਾ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪੜਾਅ ਵਿਚ ਸਧਾਰਨ ਬਸ ਪਾਸ ਆਨਲਾਈਨ ਮਾਧਿਅਮ ਨਾਲ ਬਣਨਗੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੋਮ ਡਿਲੀਵਰੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਸੇਵਾ ਦਾ ਵਿਸਥਾਰ ਕਰਕੇ ਰਿਆਇਤੀ ਦਰਾਂ ਦੇ ਪਾਸ ਜੋ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੁਆਰਾ ਦਿਵਯਾਂਗ, ਬਜ਼ੁਰਗ, ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਤੇ ਹੋਰਨਾਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਸ ਸੇਵਾ ਨਾਲ ਜੋੜ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਆਨਲਾਈਨ ਬਸ ਪਾਸ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਕਿਧਰੋਂ ਵੀ m.m.dtcpass.delhi.gov.in ਤੇ ਆਵੇਦਨ ਕੀਤਾ ਜਾ



ਸਕਦਾ ਹੈ। ਆਵੇਦਕ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਮ, ਪਿਤਾ ਦਾ ਨਾਮ, ਜਨਮ ਮਿਤੀ ਆਦਿ ਭਰਨਾ ਹੋਵੇਗਾ ਅਤੇ ਪੋਰਟਲ ਤੇ ਫੋਟੋ ਅਪਲੋਡ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਹ ਸੇਵਾ 24 ਘੰਟੇ ਚਾਲੂ ਰਹੇਗੀ।

ਡੇਬਿਟ/ਕਰੈਡਿਟ ਕਾਰਡ ਅਤੇ ਨੈਟ ਬੈਂਕਿੰਗ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਨਾਲ ਬਸ ਪਾਸ ਦੇ ਲਈ ਭੁਗਤਾਨ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਬਸ ਪਾਸ ਦੇ ਲਈ ਕੀਤੇ ਗਏ ਭੁਗਤਾਨ ਦੀ ਪੁਸ਼ਟੀ ਨਾਲ ਸਬੰਧਤ ਵੇਰਵੇ ਦੇ ਲਈ ਆਵੇਦਕ ਨੂੰ ਇਕ ਐਸਐਮਐਸ ਅਤੇ ਈ-ਮੇਲ ਭੇਜਿਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਸ ਸੇਵਾ ਦੇ ਤਹਿਤ ਆਵੇਦਕ ਨੂੰ www.indiapost.gov.in 'ਤੇ ਬਸ ਪਾਸ ਦੇ ਵੰਡ ਨਾਲ ਸਬੰਧਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੀ ਵੀ ਸੁਵਿਧਾ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ।

ਪਰਿਵਹਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਪਾਸ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਆਵੇਦਕ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਦਿੱਲੀ ਪਰਿਵਹਨ ਨਿਗਮ ਦੇ ਕੋਲ ਸੈਕਸ਼ਨ ਵਿਚ ਮੂਲ ਬਸ ਪਾਸ ਜਮ੍ਹਾਂ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇਗਾ ਅਤੇ ਰਕਮ ਵਾਪਸੀ ਦੀ ਰਾਸ਼ੀ ਆਵੇਦਕ ਦੇ ਬੈਂਕ ਸੇਵਾ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਣ ਤੋਂ ਮਨੁੱਖੀ ਸ਼ਕਤੀ ਦੀ ਬਚਤ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਬੁਨਿਆਦੀ ਢਾਂਚੇ ਦੀ ਲਾਗਤ ਵਿਚ ਵੀ ਬਚਤ ਆਏਗੀ।

(ਗੋਵਿੰਦ) ■

ਘੱਟੋ ਘੱਟ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਦੀ ਗਰੰਟੀ ਦੇ ਲਈ ਚਲਿਆ 'ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਮਿਨਿਮਮ ਵੇਜ਼'

ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ ਦੀ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਟੀਮ ਨੇ 10 ਦਿਨ ਤਕ 'ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਮਿਨਿਮਮ ਵੇਜ਼' ਦੇ ਤਹਿਤ ਮੁਹਿੰਮ ਚਲਾਈ। ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਮਿਨਿਮਮ ਵੇਜ਼ ਦਾ ਮੁੱਖ ਉਦੇਸ਼ ਸੀ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਹਰ ਹਾਲ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਦੁਆਰਾ ਤੈਅ ਘੱਟੋ ਘੱਟ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਮਿਲੇ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ ਨੂੰ ਲਗਾਤਾਰ ਇਹ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਮਿਲ ਰਹੀ ਸੀ ਕਿ ਕੁਝ ਸਰਕਾਰੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੰਸਥਾਨਾਂ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਘੱਟੋ ਘੱਟ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ।

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਕਿਰਤ ਮੰਤਰੀ ਸ੍ਰੀ ਗੋਪਾਲ ਰਾਏ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ ਦੀ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਟੀਮ ਨੇ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਮਿਨਿਮਮ ਵੇਜ਼ ਦੇ ਤਹਿਤ ਕੁਲ 182 ਸੰਸਥਾਨਾਂ ਦੀ ਜਾਂਚ ਕੀਤੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ 165 ਸੰਸਥਾਨਾਂ ਵਿਚ ਜਾਂਚ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਬੇਕਾਇਦਗੀਆਂ ਪਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਸੰਸਥਾਨਾਂ ਵਿਚ ਬੇਕਾਇਦਗੀਆਂ ਮੁੱਖ ਰੂਪ ਨਾਲ ਹਾਊਸ ਕੀਪਿੰਗ, ਸਕਿਊਰਿਟੀ, ਨਰਸਿੰਗ ਅਰਦਲੀ ਆਦਿ ਦੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਕੰਪਨੀਆਂ ਵਿਚ ਦੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲੀਆਂ।

ਕਿਰਤ ਮੰਤਰੀ ਸ੍ਰੀ ਗੋਪਾਲ ਰਾਏ ਨੇ ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ ਦੀ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਟੀਮ ਦੇ ਨਾਲ ਜਾ ਕੇ ਖੁਦ ਇਨ੍ਹਾਂ 9 ਸੰਸਥਾਨਾਂ ਦੀ ਜਾਂਚ ਕੀਤੀ:-

1. ਸੰਜੇ ਗਾਂਧੀ ਮੈਮੋਰੀਅਲ ਹਸਪਤਾਲ
2. ਫੋਰਟੀਸ ਹਸਪਤਾਲ
3. ਮਦਨਮੋਹਨ ਮਾਲਵੀਯ ਹਸਪਤਾਲ
4. ਲਾਲ ਬਹਾਦਰ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਹਸਪਤਾਲ, ਖਿਚੜੀਪੁਰ,
5. ਰਾਵ ਤੁਲਾਰਾਮ ਮੈਮੋਰੀਅਲ ਹਸਪਤਾਲ
6. ਚੋ. ਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਆਯੁਰਵੇਦ ਸੰਸਥਾਨ
7. ਤਾਜ ਹੋਟਲ
8. ਜੀ.ਟੀ.ਬੀ. ਹਸਪਤਾਲ



9. ਆਈ.ਐਸ.ਬੀ.ਟੀ.

ਜਿੰਨਾ ਸੰਸਥਾਨਾਂ ਵਿਚ ਬੇਕਾਇਦਗੀਆਂ ਪਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਜਾਂਚ ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਸਬੰਧਤ ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਦੇ ਦਫਤਰ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਕੰਪਨੀਆਂ ਦੇ ਕੰਮਕਾਜ ਵਿਚ ਬੇਕਾਇਦਗੀਆਂ ਪਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਘੱਟੋ ਘੱਟ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਤਹਿਤ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਬੇਕਾਇਦਗੀਆਂ ਨੂੰ ਦੇਖਦੇ ਹੋਏ ਚਾਰ ਕੰਪਨੀਆਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਐਫ.ਆਈ.ਆਰ. ਦਰਜ ਕਰਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਇਹ ਹਨ:-

- ▶ ਪੰਡਿਤ ਮਦਨਮੋਹਨ ਮਾਲਵੀਯ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਕੰਪਨੀ ਮੈਸਰਸ ਗਲੋਬਲ ਇੰਟਰਪ੍ਰਾਈਜੇਜ਼।
- ▶ ਰਾਵ ਤੁਲਾਰਾਮ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਕੰਪਨੀ ਮੈਸਰਸ ਜੀ.ਏ. ਡਿਜੀਟਲ ਵੇਵ ਵਰਡ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਲਿ. ਅਤੇ ਓਰੀਅਨ ਸਕਿਊਰਿਟੀ ਸਾਲਯੂਸ਼ਨ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਲਿ.
- ▶ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਕੰਪਨੀ ਮੈਸਰਸ ਗੁਰੂ ਜੀ ਅਲੀਵੇਟਰ।

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਕਿਰਤ ਮੰਤਰੀ ਸ੍ਰੀ ਗੋਪਾਲ ਰਾਏ ਨੇ ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ ਨੂੰ ਆਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਸਾਰੇ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖਾਂ ਨੂੰ ਅਡਵਾਇਜ਼ਰੀ ਜਾਰੀ ਕਰੇ ਕਿ ਉਹ ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਕਰਨ ਕਿ ਵਿਭਾਗਾਂ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਦੀਆਂ ਕੰਪਨੀਆਂ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਘੱਟੋ ਘੱਟ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਮਿਲੇ। ਜੇਕਰ ਇਸ ਵਿਚ ਕੋਈ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਸਬੰਧਤ ਅਧਿਕਾਰੀ ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਹੋਣਗੇ।

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ਸੰਸਥਾਨਾਂ/ਕੰਪਨੀਆਂ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਤਹਿਤ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਘੱਟੋ ਘੱਟ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਦੇਣ।

(ਚੰਦਨ ਕੁਮਾਰ) ■



ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਸਾਰਥਕ ਬਨਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦਾ 550ਵਾਂ ਜਨਮ ਦਿਹਾੜਾ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਸੰਸਾਰਕ ਭਾਈਚਾਰਾ ਸਾਲ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮਨਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਵੀ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਜੀਵਨ ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਇਕ ਚਿੱਤਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨੀ ਲਗਾਈ ਗਈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਦੇਖਣ ਦੇ ਲਈ ਆਮ ਜਨਤਾ ਅਤੇ ਸਕੂਲੀ ਬੱਚੇ ਵੱਡੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚੇ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਪੇਸ਼ ਹੈ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਇਕ ਲੇਖ-

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਅੰਧਵਿਸ਼ਵਾਸ ਅਤੇ ਅਭੰਬਰਾਂ ਦੇ ਕੱਟੜ ਵਿਰੋਧੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਉਤਸਵ (ਜਨਮ ਦਿਨ) ਕਾਰਤਿਕ ਪੂਰਨਿਮਾ ਨੂੰ ਮਨਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਜਨਮ 15 ਅਪ੍ਰੈਲ 1469 ਨੂੰ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਤਲਵੰਡੀ ਨਾਮਕ ਸਥਾਨ ਤੇ ਇਕ ਕਿਸਾਨ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਜਨਮੇ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮੱਥੇ ਤੇ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਤੇਜ਼ ਚਮਕ ਸੀ। ਤਲਵੰਡੀ ਜੋ ਕਿ ਹੁਣ ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਵਿਚ ਲਾਹੌਰ ਤੋਂ 30 ਮੀਲ ਪੱਛਮ ਵਿਚ ਸਥਿਤ ਹੈ, ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦਾ ਨਾਮ ਨਾਲ ਜੁੜ ਦੇ ਬਾਅਦ ਅੱਗੇ ਚੱਲ ਕੇ ਨਨਕਾਣਾ ਕਹਾਇਆ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ





ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਉਤਸਵ ਤੇ ਹਰ ਸਾਲ ਭਾਰਤ ਤੋਂ ਸਿੱਖ ਸ਼ਰਧਾਲੂਆਂ ਦਾ ਜੱਥਾ ਨਨਕਾਨਾ ਸਾਹਿਬ ਜਾ ਕੇ ਇਥੇ ਅਰਦਾਸ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦਾ ਬਚਪਨ

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਗੰਭੀਰ ਸੁਭਾਅ ਦੇ ਸਨ। ਜਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਾਥੀ ਖੇਡਣ ਕੁੱਦਣ ਵਿਚ ਰੁਝੇ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਬੰਦ ਕਰਕੇ ਚਿੰਤਨ-ਮਨਨ ਵਿਚ ਮਗਨ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਇਹ ਦੇਖ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਤਾ ਕਾਲੂ ਅਤੇ ਮਾਤਾ ਤ੍ਰਿਪਤਾ ਫਿਕਰਮੰਦ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਤਾ ਨੇ ਪੰਡਿਤ ਹਰਦਯਾਲ ਦੇ ਕੋਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖਿਆ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਭੇਜਿਆ, ਲੇਕਿਨ ਪੰਡਿਤ ਜੀ ਬਾਲਕ ਨਾਨਕ ਦੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਤੇ ਨਿਰਉਤਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਗਿਆਨ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਸਮਝ ਗਏ ਕਿ ਇਹ ਵਿਰਲਾ ਬਾਲਕ ਹੈ। ਨਾਨਕ ਨੂੰ ਮੌਲਵੀ ਕੁਤੁਬਦੀਨ ਦੇ ਕੋਲ ਪੜ੍ਹਨ ਦੇ ਲਈ ਭੇਜਿਆ ਗਿਆ ਲੇਕਿਨ ਉਹ ਵੀ ਨਾਨਕ ਦੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਤੋਂ ਨਿਰਉਤਰ ਹੋ ਗਏ। ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਨੇ ਘਰ-ਬਾਹਰ ਛੱਡ ਦਿਤਾ ਅਤੇ ਦੂਰ-ਦੂਰ ਦੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦਾ ਦੌਰਾ ਕੀਤਾ ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਪਾਸਨਾ ਦਾ ਸਾਧਾਰਨ ਸਵਰੂਪ ਸਥਿਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੱਡੀ ਸਹਾਇਤਾ ਮਿਲੀ। ਅੰਤ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ 'ਨਿਰਗੁਣ ਉਪਾਸਨਾ' ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਸਿੱਖ ਸੰਪਰਦਾ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਗੁਰੂ ਹੋਏ।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦਾ ਪਰਿਵਾਰ

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਸੰਨ 1485 ਵਿਚ ਬਟਾਲਾ ਨਿਵਾਸੀ ਬੀਬੀ ਸੁਲਕਖਨੀ ਨਾਲ ਹੋਇਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤਰ ਸ੍ਰੀਚੰਦ

ਅਤੇ ਲਕਸ਼ਮੀਚੰਦ ਸਨ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਪਿਤਾ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਖੇਤੀਬਾੜੀ, ਵਪਾਰ ਆਦਿ ਵਿਚ ਲਗਾਉਣਾ ਚਾਹਿਆ ਪਰ ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਬੇਕਾਰ ਸਾਬਤ ਹੋਈਆਂ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਤਾ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਘੋੜਿਆਂ ਦਾ ਵਪਾਰ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਜੇ ਰਕਮ ਦਿੱਤੀ, ਨਾਨਕ ਜੀ ਨੇ ਉਸ ਨੂੰ ਸਾਧੂ ਸੇਵਾ ਵਿਚ ਲਗਾ ਦਿਤਾ। ਕੁਝ ਸਮੇਂ ਬਾਅਦ ਨਾਨਕ ਜੀ ਆਪਣੇ ਜੀਜੇ ਦੇ ਕੋਲ ਸੁਲਤਾਨਪੁਰ ਚਲੇ ਗਏ। ਉਥੇ ਉਹ ਸੁਲਤਾਨਪੁਰ ਦੇ ਗਵਰਨਰ ਦੌਲਤ ਖਾਂ ਦੇ ਇਥੇ ਮੋਦੀ ਰਖ ਲਏ ਗਏ। ਉਹ ਆਪਣਾ ਕੰਮ ਪੂਰੀ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਦੇ ਨਾਲ ਕਰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਜੋ ਵੀ ਆਮਦਨ ਹੁੰਦੀ ਸੀ ਉਸ ਦਾ ਸ਼ਿ ਆਦਾਤਰ ਹਿਸਾ ਸਾਧੂਆਂ ਅਤੇ ਗਰੀਬਾਂ ਨੂੰ ਦੇ ਦਿੰਦੇ ਸਨ।

ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਪਿਲਾਇਆ ਅੰਮ੍ਰਿਤ

ਸਿੱਖ ਗਰੰਥਾਂ ਵਿਚ ਜ਼ਿਕਰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਰੋਜ਼ ਵੇਈ ਨਦੀ ਵਿਚ ਇਸ਼ਨਾਨ ਕਰਨ ਜਾਇਆ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਇਕ ਦਿਨ ਉਹ ਇਸ਼ਨਾਨ ਕਰਨ ਦੇ ਬਾਅਦ ਜੰਗਲ ਵਿਚ ਅੰਤਰਧਿਆਨ ਹੋ ਗਏ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨਾਲ ਮਿਲਾਪ ਹੋਇਆ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪਿਲਾਇਆ ਅਤੇ ਕਿਹਾ- ਮੈਂ ਸਦਾ ਤੁਹਾਡੇ ਨਾਲ ਹਾਂ, ਜੋ ਤੁਹਾਡੇ ਸੰਪਰਕ ਵਿਚ ਆਉਣਗੇ ਉਹ ਵੀ ਆਨੰਦਿਤ ਹੋ ਹੋਣਗੇ। ਜਾਓ ਦਾਨ ਦਿਉ, ਉਪਾਸਨਾ ਕਰੋ, ਖੁਦ ਨਾਮ ਜਪੋ ਅਤੇ ਦੂਜਿਆਂ ਤੋਂ ਵੀ ਨਾਮ ਸਿਮਰਨ ਕਰਾਓ। ਇਸ ਘਟਨਾ ਦੇ ਬਾਅਦ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਭਾਰ ਆਪਣੇ ਸਹੁਰੇ ਨੂੰ ਸੌਂਪ ਕੇ ਉਦਾਸੀਆਂ ਤੇ ਨਿਕਲ ਪਏ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨ ਲਗੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਵਖ-ਵਖ ਹਿਸਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀਆਂ ਵੀ ਯਾਤਰਾਵਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ਅਤੇ ਲੋਕ ਸੇਵਾ ਦਾ





ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ। ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਉਹ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਵਿਚ ਵਸ ਗਏ ਅਤੇ 1521 ਈ. ਤੋਂ 1539 ਈ. ਤਕ ਉਥੇ ਰਹੇ।

ਲੰਗਰ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰਨ ਅਤੇ ਸਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਨਜ਼ਰ ਨਾਲ ਦੇਖਣ ਦੀ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਕਦਮ ਉਠਾਉਂਦੇ ਹੋਏ 'ਲੰਗਰ' ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਲੰਗਰ ਵਿਚ ਛੋਟੇ-ਵੱਡੇ, ਅਮੀਰ-ਗਰੀਬ ਇਕ ਹੀ ਲਾਇਨ ਵਿਚ ਬੈਠ ਕੇ ਭੋਜਨ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਅੱਜ ਵੀ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਵਿਚ ਉਸੇ ਲੰਗਰ ਦੀ ਵਿਵਸਥਾ ਚਲ ਰਹੀ ਹੈ, ਜਿਥੇ ਹਰ ਸਮੇਂ ਹਰ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਭੋਜਨ ਉਪਲਬਧ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਭਗਤੀ ਦਾ ਭਾਵ ਮੁੱਖ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦਾ ਜਨਮ ਦਿਨ ਗੁਰਪੂਰਬ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮਨਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦਿਨ ਪ੍ਰਭਾਤ ਫੇਰੀਆਂ ਕੱਢੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਥਾਂ-ਥਾਂ ਭਗਤ ਲੋਕ ਪਾਣੀ ਅਤੇ ਸ਼ਰਬਤ ਆਦਿ ਦੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ 1539 ਈ. ਵਿਚ ਜੋਤੀਜੋਤ ਸਮਾਂ ਗਏ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਗੱਦੀ ਦਾ ਭਾਰ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦੇਵ (ਬਾਬਾ ਲਹਨਾ) ਨੂੰ ਸੌਂਪ ਦਿਤਾ ਅਤੇ ਖੁਦ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਵਿਚ 'ਜੋਤੀ ਲੀਨ' ਹੋ ਗਏ।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਭਗਤਾਂ ਨੂੰ ਦੱਸ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿਤੇ ਜੋ ਕਿ ਸਦਾ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕ ਬਣੇ ਰਹਿਣਗੇ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਮੂਲ ਨਿਚੋੜ ਇਹੋ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਇਕ, ਅਨੰਤ, ਸਰਵਸ਼ਕਤੀਮਾਨ ਅਤੇ ਸੱਚ ਹੈ। ਉਹ ਹਰ ਜਗ੍ਹਾ ਹੈ। ਮੂਰਤੀ-ਪੂਜਾ ਆਦਿ ਨਿਰਅਰਥ ਹੈ। ਨਾਮ-ਸਿਮਰਨ ਸਭ ਤੋਂ ਉਪਰ ਤੱਤ ਹੈ

ਅਤੇ ਨਾਮ ਗੁਰੂ ਦੇ ਦੁਆਰਾ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੀ ਵਾਨੀ ਭਗਤੀ, ਗਿਆਨ ਅਤੇ ਵੈਰਾਗ ਭਰਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਭਗਤਾਂ ਨੂੰ ਜੀਵਨ ਦੀਆਂ ਦਸ ਸਿਖਿਆਵਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਜੋ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹਨ:-

1. ਈਸ਼ਵਰ ਇਕ ਹੈ।
2. ਸਦਾ ਇਕ ਹੀ ਈਸ਼ਵਰ ਦੀ ਉਪਾਸਨਾ ਕਰੋ।
3. ਈਸ਼ਵਰ ਸਭ ਜਗ੍ਹਾ ਅਤੇ ਹਰ ਮਨੁੱਖ ਵਿਚ ਮੌਜੂਦ ਹੈ।
4. ਈਸ਼ਵਰ ਦੀ ਭਗਤੀ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਦਾ ਡਰ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ।
5. ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਨਾਲ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਪੇਟ ਪਾਲਨਾ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
6. ਬੁਰਾ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਨਾ ਸੋਚੋ ਅਤੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਸਤਾਉ।
7. ਸਦਾ ਖੁਸ਼ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਈਸ਼ਵਰ ਤੋਂ ਸਦਾ ਆਪਣੇ ਲਈ ਮਾਫੀ ਮੰਗਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
8. ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਦੀ ਕਮਾਈ ਵਿਚੋਂ ਜ਼ਰੂਰਤਮੰਦ ਨੂੰ ਵੀ ਕੁਝ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।
9. ਸਾਰੇ ਇਸਤਰੀ ਅਤੇ ਪੁਰਸ਼ ਬਰਾਬਰ ਹਨ।
10. ਭੋਜਨ ਸਰੀਰ ਨੂੰ ਜਿੰਦਾ ਰੱਖਣ ਦੇ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਪਰ ਲੋਭ ਲਾਲਚ ਅਤੇ ਜਮ੍ਹਾਂਖੋਰੀ ਬੁਰੀ ਹੈ।

(ਸੁਭਾ ਦੁਬੇ) ■



ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਦੌੜਨਗੀਆਂ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਬੱਸਾਂ



ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਪੱਧਰ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਚਿੰਤਾ ਜਤਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਇਸ ਨੂੰ ਘੱਟ ਕਰਨ ਦੇ ਸਾਰੇ ਉਪਾਅ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਲੜੀ ਵਿਚ ਹੁਣ ਐਸੀ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਜਿਥੇ ਬੱਸਾਂ ਪੈਟਰੋਲ ਜਾਂ ਡੀਜ਼ਲ ਨਾਲ ਨਹੀਂ, ਬਿਜਲੀ ਦੇ ਦਮ ਤੇ ਚਲਣ। ਯਾਨੀ ਨਾ ਧੂੰਆਂ ਅਤੇ ਨਾ ਸ਼ੋਰ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਜਲਦੀ ਹੀ ਐਸੀਆਂ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਬੱਸਾਂ ਦੌੜਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰ ਆਉਣਗੀਆਂ।

ਐਨਡੀਐਮਸੀ ਕਨਵੇਂਸ਼ਨ ਸੈਂਟਰ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਡਾਯਲਾਗ ਅਤੇ ਡੇਵਲਪਮੈਂਟ ਕਮਿਸ਼ਨ ਦੁਆਰਾ 'ਦਿੱਲੀ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ

ਪਾਲਿਸੀ 2018' ਤੇ ਸੁਝਾਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਆਯੋਜਿਤ ਪਰਿਚਰਚਾ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਿਤ ਕਰਦੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਕੱਠੇ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਬੱਸਾਂ ਲਿਆਉਣ ਵਾਲਾ ਦਿੱਲੀ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਰਾਜ ਹੋਵੇਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਵੱਡੀ ਸਮੱਸਿਆ ਬਣ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਸਾਰਵਜਨਿਕ ਪਰਿਵਹਨ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕੀਤਾ ਜਾਏ ਤਾਂ ਲੋਕ ਨਿਜੀ ਵਾਹਨਾਂ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਇਸ ਦਾ ਉਪਯੋਗ ਕਰਨਗੇ। ਇਸ ਨਾਲ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਵਿਚ ਕਮੀ ਲਿਆਂਦੀ ਜਾ ਸਕੇਗੀ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਡਾਯਲਾਗ ਅਤੇ ਡਿਵੈਲਪਮੈਂਟ ਕਮਿਸ਼ਨ ਦਾ ਇਹ



ਕਦਮ ਤਾਰੀਫ਼ ਯੋਗ ਹੈ। ਉਸ ਨੇ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ ਉਪਯੋਗ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਦੂਜੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਸੋਧ ਲਈ ਹੈ, ਅਤੇ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਬੇਸ਼ਕੀਮਤੀ ਸੁਝਾਅ ਦਿਤਾ ਹੈ।

ਵਹੀਕਲ ਪਾਲਿਸੀ 2018 ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਨਾਲ ਨਿਪਟਣ ਦੇ ਲਈ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸਮੇਂ ਦੀ ਮੰਗ ਹੈ। ਹੁਣ ਇਸ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਸਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਾਰਵਜਨਿਕ ਪਰਿਵਹਨ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਤਹਿਤ ਕੁਲ ਤਿੰਨ ਹਜ਼ਾਰ ਬਸਾਂ ਲਿਆਂਦੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਬੱਸਾਂ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਹੋਣਗੀਆਂ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ ਦੇ ਮਾਹਿਰਾਂ ਨੂੰ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਅਤੇ ਸੁਝਾਅ ਦੇਣ ਤਾਂ

ਕਿ ਇਸ ਨੀਤੀ ਨੂੰ ਸਹੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਮਦਦ ਮਿਲੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ ਨਿਰਮਾਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਦੀ ਤਕਨੀਕ ਕਿਫਾਇਤੀ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਵੀ ਕਿਹਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬਸ ਦੀ ਕੀਮਤ ਦੀ ਅੱਧੀ ਰਕਮ ਸਿਰਫ਼ ਬੈਟਰੀ ਸਿਸਟਮ ਤੇ ਖਰਚ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਉਦਯੋਗਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਤੇ ਸ਼ੋਧ ਕਰਨ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ

ਇਸ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਕੁਝ ਸਮੇਂ ਦੇ ਲਈ ਸਬਸਿਡੀ ਜਰੂਰੀ ਦੇ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਇਹ ਸਥਾਈ ਹਲ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜੇਕਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਬੱਸਾਂ ਦਾ ਅਨੁਭਵ ਚੰਗਾ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਭਵਿੱਖ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਬੱਸਾਂ ਨੂੰ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਿਚ ਬਦਲਣ ਦਾ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਪਰਿਵਹਨ ਮੰਤਰੀ ਕੈਲਾਸ਼ ਗਹਲੋਤ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ ਪਾਲਿਸੀ ਨੂੰ ਸਹੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਤੇ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਚੁਣੌਤੀ ਬਸਾਂ ਦੇ ਲਈ ਚਾਰਜਿੰਗ ਸਟੇਸ਼ਨ ਸਥਾਪਤ ਕਰਨ ਦੀ ਹੈ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਆਈਆਈਟੀ ਮਦਰਾਸ ਦੇ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਅਸ਼ੋਕ ਝੁਨਝੁਨਵਾਲਾ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ ਪਾਲਿਸੀ ਦੀ ਸ਼ਲਾਘਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਰਾਜ ਨੇ ਇੰਨੀ ਚੰਗੀ ਪਾਲਿਸੀ ਨਹੀਂ ਬਣਾਈ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਹਰ ਪਹਿਲੂ ਤੇ ਧਿਆਨ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਸਰਕਾਰ ਇਸ ਨੀਤੀ ਤੇ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਕੁਝ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਬਸਾਂ ਦਿੱਲੀ ਦੀਆਂ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਣ ਲਗੀਆਂ ਹਨ। ■

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਇਸ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਕੁਝ ਸਮੇਂ ਦੇ ਲਈ ਸਬਸਿਡੀ ਜਰੂਰੀ ਦੇ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਇਹ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਪਰਿਵਹਨ ਮੰਤਰੀ ਕੈਲਾਸ਼ ਗਹਲੋਤ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਇਲੈਕਟ੍ਰਿਕ ਵਹੀਕਲ ਪਾਲਿਸੀ ਨੂੰ ਸਹੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਤੇ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਚੁਣੌਤੀ ਬਸਾਂ ਦੇ ਲਈ ਚਾਰਜਿੰਗ ਸਟੇਸ਼ਨ ਸਥਾਪਤ ਕਰਨ ਦੀ ਹੈ।



مستقل حل نہیں ہے۔ وزیر اعلیٰ نے کہا کہ اگر ان ایک ہزار بسوں کا تجربہ اچھا رہا تو مستقبل میں دہلی کی ساری بسوں کو الیکٹرک میں بدلنے کا کام کیا جائے گا۔

اس موقع پر وزیر نقل و حمل کیلاش گہلوت نے کہا کہ سرکار الیکٹرک وہیکل پالیسی کو صحیح ڈھنگ سے لاگو کرنے پر تیزی سے کام کر رہی ہے۔ سرکار کی سب سے بڑی چنوتی بسوں کیلئے چارجنگ اسٹیشن انسٹال کرنے کی

ہے۔

اس موقع پر آئی آئی ٹی مدراس کے پروفیسر اشوک بھجن والا نے دہلی سرکار کی الیکٹرک وہیکل پالیسی کی سراہنا کرتے ہوئے کہا کہ ملک میں کسی اور صوبے میں اتنی بہتر پالیسی نہیں بنائی ہے۔ اس میں ہر پہلو پر دھیان دیا گیا ہے۔

سرکار اس نیتی پر تیزی سے کام کر رہی ہے۔ کچھ الیکٹرک بسیں دہلی کی سڑکوں پر نظر بھی آنے لگی ہیں۔

آلودگی سے نمٹنے کے لئے الیکٹرک گاڑی کا استعمال وقت کی مانگ ہے۔ اب اس جانب میں سبھی کو مل کر کام کرنا ہے۔ دہلی سرکار عوامی نقل و حمل کے نظام کو مضبوط کرنے کے لئے کام کر رہی ہے اس کے تحت کل 300 ہزار بسیں لائی جا رہی ہیں۔ اس میں ایک ہزار بس الیکٹرک ہوں گی۔

انہوں نے الیکٹرک گاڑی کے ماہروں سے اپیل کی کہ وہ اس پر خیال کریں اور سمجھاؤ دیں تاکہ اس نیتی کو صحیح ڈھنگ سے لاگو کرنے میں سرکار کو مدد ملے۔ انہوں نے الیکٹرک گاڑی بنانے والوں سے اس کی تکنیک کفایتی کرنے کے لئے بھی کہا۔ انہوں نے کہا کہ بس کی قیمت کی آدھی رقم صرف بیٹری سسٹم پر خرچ ہوتی ہے اسی لئے اس سے جڑے صنعتوں کو اس پر اور تلاش کرنے کی ضرورت ہے۔

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ سرکار اس کو بڑھاوا دینے کے لئے سرکار کچھ وقت کیلئے سبسڈی ضرور دے سکتی ہے، لیکن یہ

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ سرکار اس کو بڑھاوا دینے کے لئے سرکار کچھ وقت کیلئے سبسڈی ضرور دے سکتی ہے، لیکن یہ

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ اگر ان ایک ہزار بسوں کا تجربہ اچھا رہا تو مستقبل میں دہلی کی ساری بسوں کو الیکٹرک میں بدلنے کا کام کیا جائے گا۔ اس موقع پر وزیر نقل و حمل کیلاش گہلوت نے کہا کہ سرکار الیکٹرک وہیکل پالیسی کو صحیح ڈھنگ سے لاگو کرنے پر تیزی سے کام کر رہی ہے۔ سرکار کی سب سے بڑی چنوتی بسوں کیلئے چارجنگ اسٹیشن انسٹال کرنے کی ہے۔

دہلی میں دوڑے گی ایک ہزار الیکٹرونک بسیں



دہلی میں آلودگی لیول کو لیکر پوری دنیا میں فکر جتائی جاتی ہے سرکار اسے کم کرنے کے تمام ترکیب اپنا رہی ہے۔ اسی ترتیب میں اب ایسی دہلی کا تخیل کیا گیا ہے۔ جہاں بسیں پٹرول یا ڈیزل سے نہیں، بجلی کے دم پر چلیں۔ یعنی نہ دھواں اور نہ شور۔ دہلی میں ایسی ہی 1000 بسیں دوڑتی نظر آئیں گی۔

این ڈی ایم سی کنونشن سینٹر میں دہلی ڈائیلوگ اور ڈیولپمنٹ کمیشن کے ذریعہ دہلی الیکٹرک وہیکل پالیسی 2018 پر تجاویزوں کے لئے منعقدہ اجلاس کو مخاطب کرتے ہوئے وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال نے کہا ہے کہ ایک ساتھ ایک ہزار الیکٹرک بسیں لانے والا دہلی ملک کی پہلی ریاست ہوگی۔ انہوں نے کہا ہے کہ آلودگی دہلی کا بڑا مسئلہ بن چکا ہے۔ عوامی نقل و حمل نظام کو مضبوط کیا جائے تو لوگ ذاتی گاڑیوں کو چھوڑ کر اس کا استعمال کریں گے۔ اس سے آلودگی میں کمی لائی جاسکے گی۔

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ دہلی ڈائیلوگ اور ڈیولپمنٹ کمیشن کا یہ قدم قابل تعریف ہے۔ اس نے الیکٹرک وہیکل استعمال کرنے والے دوسرے ملکوں و ملک کے دیگر ریاستوں کے استعمال کا مطالعہ کیا ہے۔ ایک سال کے اندر دہلی الیکٹرک وہیکل پالیسی 2018 کو تیار کیا گیا ہے۔

دہلی میں آلودگی لیول کو لیکر پوری دنیا میں فکر جتائی جاتی ہے سرکار اسے کم کرنے کے تمام ترکیب اپنا رہی ہے۔ اسی ترتیب میں اب ایسی دہلی کا تخیل کیا گیا ہے۔ جہاں بسیں پٹرول یا ڈیزل سے نہیں، بجلی کے دم پر چلیں۔ یعنی نہ دھواں اور نہ شور۔ دہلی میں ایسی ہی 1000 بسیں دوڑتی نظر آئیں گی۔

این ڈی ایم سی کنونشن سینٹر میں دہلی ڈائیلوگ اور ڈیولپمنٹ کمیشن کے ذریعہ دہلی الیکٹرک وہیکل پالیسی 2018 پر تجاویزوں کے لئے منعقدہ اجلاس کو مخاطب کرتے ہوئے وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال نے کہا



وغیرہ بیکار ہے نام یاد آوری اعلیٰ عنصر ہے اور نام گرو کے ذریعہ ہی حاصل ہوتا ہے گرو نانک کی زبان و کلام، علم اور رویشی سے بھری ہے۔ انہوں نے اپنے مقلد کو زندگی کی دس ہدایتیں دیں جو اس طرح ہیں:-

1. خدا ایک ہے۔
2. ہمیشہ ایک ہی خدا کی عبادت کرو۔
3. خدا سب جگہ اور زندہ مخلوق میں موجود ہے۔
4. خدا کی عبادت کرنے والوں کو کسی کا خوف نہیں رہتا۔
5. ایمان داری سے اور محنت کر کے پیٹ بھرنا چاہئے۔
6. برا کام کرنے کے بارے میں نہ سوچیں اور نہ ہی کسی کو پریشان کریں۔
7. ہمیشہ خوش رہنا چاہئے، خدا سے ہمیشہ اپنے لئے معافی مانگی چاہئے۔
8. محنت اور ایمان داری کی کمائی سے ضرورت مند کو بھی کچھ دینا چاہئے۔
9. سبھی عورت اور مرد برابر ہیں۔
10. کھانا جسم کو زندہ رکھنے کیلئے ضروری ہے پر حرص-لاچ اور سامان جمع کرنا بری بات ہے۔

■ (شوبھا دیو بے)

نصیحت دی۔ بعد میں وہ کرتار پور میں بس گئے اور 1521ء سے 1539ء تک وہیں رہے۔

لنگر کی شروعات

گرو نانک دیو جی نے جات پات کو ختم کرنے اور سبھی کو ایک نظر سے دیکھنے کی جانب میں قدم اٹھاتے ہوئے 'لنگر' کا رواج شروع کیا تھا۔ لنگر میں سب چھوٹے بڑے امیر غریب ایک ہی لائن میں بیٹھ کر کھانا کھایا کرتے تھے۔ آج بھی گرو دوارے میں بھی اسی لنگر کا بندوبست چل رہا ہے، جہاں ہر وقت ہر کسی کو کھانا دستیاب ہوتا ہے۔ اس میں خدمت اور عقیدت کی قیمت اہم ہوتی ہے نانک دیو جی کا جنم دن گرو پرو کے طور پر منایا جاتا ہے اس دن سحر جلوس نکالا جاتا ہے جگہ جگہ بھگت لوگ پانی اور شربت وغیرہ کا بندوبست کرتے ہیں۔ گرو نانک جی کا رحلت 1539ء میں ہوئی۔ انہوں نے گرو گدی گرو انگد دیو کو سونپ دی اور خود کرتار پور میں 'جیوتی لین' ہو گئے۔

گرو نانک کے نصیحت

گرو نانک جی نے اپنے مقلدوں کو دس نصیحت دی جو کی ہمیشہ کا رآمد بنے رہیں گے۔ گرو نانک جی کی تعلیم کا اصل نچوڑ یہی ہے کہ روح مطلق ایک، لامتناہی، قادرِ کل اور سچ ہے وہ ہر جگہ جاری و ساری ہے۔ مورتی پوجا





سے ہوا ان کے دو بیٹے شری چند اور لکشمی چند تھے۔ گرو نانک کے والد نے انہیں کھیتی، کاروبار وغیرہ میں لگانا چاہا لیکن یہ ساری کوشش ناکام ثابت ہوئی ان کے والد نے انہیں گھوڑوں کا کاروبار کرنے کے لئے جوڑم دی، نانک جی نے اسے پارسا خدمت میں لگا دیا۔ کچھ وقت بعد نانک جی اپنے بہنوئی جی کے پاس سلطانپور چلے گئے وہاں وہ سلطان پور کے گورنر دولت خان کے یہاں مودی رکھ لئے گئے۔ وہ اپنا کام پوری ایمانداری کے ساتھ کرتے تھے اور جو بھی آمدنی ہوتی تھی اس کا زیادہ تر حصہ پارساؤں اور غریبوں کو دے دیتے تھے۔

روح مطلق نے پلا یا آب حیات

سکھ کتابوں میں ذکر ملتا ہے کہ گرو نانک ننیہ بے ای ندی میں غسل کرنے جایا کرتے تھے ایک دن وہ غسل کرنے کے بعد جنگل میں ٹھہر گئے اس وقت انہیں روح مطلق سے سامنا ہوا روح مطلق نے انہیں آب حیات پلایا اور کہا، میں ہمیشہ تمہارے ساتھ ہوں جو تمہارے رابطہ میں آئیں گے وہ بھی خوش ہوں گے جاؤ دان دو، عبادت کرو، خود نام لو اور دوسروں سے بھی نام یاد کراؤ۔ اس حادثہ کے بعد وہ اپنے خاندان کا بھارا اپنے سامع کو سوئیپ کو سیر کرنے نکل پڑے اور مذہب کا اشاعت کرنے لگے انہیں ملک کے مختلف حصوں کے ساتھ ہی غیر ملکوں کی بھی سیر کی اور عوامی خدمات کی

نام ساتھ جڑنے کے بعد آگے چل کر ننگا نا کہلایا۔ گرو نانک کے پرکاش اتسو پر ہر سال بھارت کے سکھ عقیدتمندوں کا جتھاننگا صاحب جا کروہاں دعا کرتا ہے۔

گرو نانک کا بچپن

گرو نانک بچپن سے ہی سنجیدہ رویہ کے تھے۔ جب ان کے ساتھی کھیل کود میں مصروف ہوتے تھے تو وہ اپنی آنکھ بند کر غور و فکر میں کھو جاتے تھے وہ یہ دیکھ ان کے والد کا لواور ماں تر پتا فکر مند رہتے تھے۔ ان کے والد نے پنڈت ہر دیاں کے پاس انہیں تعلیم حاصل کرنے کے لئے بھیجا لیکن پنڈت جی بالک نانک کے سوالوں پر لا جواب ہو جاتے تھے اور ان کے علم کو دیکھ کر سمجھ گئے کہ یہ عجیب بچہ ہے۔ نانک کو مولوی قطب الدین کے پاس پڑھنے کے لئے بھیجا گیا لیکن وہ بھی نانک کے سوالوں سے لا جواب ہو گئے۔ بعد میں گرو نانک نے گھر بار چھوڑ دیا اور دور دور کے ملکوں کی سیر کی جس سے عبادت کی عام شکل قائم کرنے میں انہیں بڑی مدد ملی۔ آخر میں انہوں نے غیر صفاقی عبادت کی اشاعت شروع کی اور سکھ فرقہ کے گرو ہوئے۔

گرو نانک کا خاندان

گرو نانک جی کا نکاح 1485ء میں بٹالا باشندہ لڑکی سلکھنی



श्री गुरु नानक देव जी
के 550वें प्रकाश उत्सव
को समर्पित कार्यक्रम
“गुरु नानक कीयां बातां”
शुक्रवार, 7 दिसम्बर, 2018, सांय 5:00 बजे
विद्यापीठ परमार्थ विद्यालय, दिल्ली

زندگی کو کامیاب بناتی ہیں گرو نانک کی تعلیمات

گرو نانک دیو جی سکھوں کے پہلے گرو تھے۔ تو ہم پرستی اور بناوٹوں/اریا کاریوں کے کٹر مخالف گرو نانک کا پرکاش اتسو (جنم دن) کار تک پورنما کو منایا جاتا ہے۔ ان کا جنم 15 اپریل 1469ء کو ہوا تھا۔ گرو نانک پنجاب کے تلونڈی نامی جگہ پر ایک کسان خاندان میں جنمے تھے۔ ان کے پیشانی پر شروع سے ہی تیز نور تھا۔ تلونڈی جو کہ اب پاکستان میں لاہور سے 30 میل مغرب میں موجود ہے، گرو نانک کا

گرو نانک کا 550واں سالگرہ پوری دنیا میں عالمی بھائی چارہ برس کے روپ میں منائی جا رہی ہے۔ دہلی سرکار کی جانب سے بھی اس سلسلے میں تمام تیاری کی گئی۔ دہلی ودھان سبھا میں گرو نانک کے زندگی پر منحصر ایک تصویری نمائش لگائی گئی جسے دیکھنے کے لئے عام جنتا اور اسکولی بچے بڑی تعداد میں پہونچے۔ اس موقع پر پیش ہے گرو نانک کی زندگی اور تعلیمات پر منحصر ایک آرٹیکل۔



کم از کم مزدوری کی گارنٹی کیلئے چلا 'آپریشن منیمم ویج'

جن اداروں میں بے قاعدگی پائی گئی ہے اس کی جانچ لیبر ڈپارٹمنٹ کے متعلقہ ڈپٹی لیبر کمشنر دفتر میں ہوگی جن کمپنی کے کام کاج میں بے قاعدگی پائی گئی ہے ان کے خلاف کم از کم مزدوری قانون کے تحت کارروائی کی جائے گی۔

بے قاعدگی کو دیکھتے ہوئے چار کمپنیوں کے خلاف ایف آئی آر درج کرائی گئی ہے۔ یہ



ہیں:-

- پنڈت مدن موہن مالویہ ہاسپٹل میں کام کرنے والی کمپنی میسرز گلوبل انٹرپرائزز
 - راؤ تلال رام اسپتال میں کام کرنے والی کمپنی میسرز جی اے ڈیجیٹل ویو ورڈ پرائیویٹ لمیٹیڈ، اور اورین سیکورٹی سالیون پرائیویٹ لمیٹیڈ۔
 - گرو گو بند سنگھ اسپتال میں کام کرنے والی کمپنی میسرز گرو جی ایویوٹر۔
- دہلی کے وزیر محنت جناب گوپال رائے نے لیبر محکمہ کو ہدایت دیا ہے کہ وہ دہلی سرکار کے سبھی محکموں کے اعلیٰ افسروں کو ایڈوائزری جاری کرے کہ وہ یہ یقینی بنائیں کہ محکموں میں متعلقہ کمپنیوں میں کام کرنے والے ملازمین کو کم از کم مزدوری ملے۔ اگر اس میں کوئی شکایت ملتی ہے تو متعلقہ افسر اس کے لئے ذمہ دار ہوں گے۔
- دہلی میں کام کرنے والے سبھی سنسٹھانوں / کمپنیوں سے سرکار نے اپیل کی ہے کہ اپنے تحت کام کرنے والے لوگوں کو کم از کم مزدوری دیں۔

■ (چندن کمار)

لیبر ڈپارٹمنٹ کی ترغیبی ٹیم نے دس دن تک 'آپریشن منیمم ویج' کے تحت مہم چلائی۔ آپریشن منیمم ویج کا خاص مقصد یہ تھا کہ دہلی کے لوگوں کو ہر حال میں سرکار کے ذریعے مقررہ کم از کم مزدوری ملے۔ دہلی سرکار کے لیبر ڈپارٹمنٹ کو لگاتار یہ شکایت مل رہی تھی کہ کچھ سرکاری اور پرائیویٹ اداروں میں کام کرنے والے ملازمین کو کم از کم مزدوری نہیں دی جا رہی ہے۔

دہلی کے وزیر محنت جناب گوپال رائے نے بتایا کہ لیبر ڈپارٹمنٹ کی ترغیبی ٹیم نے آپریشن منیمم ویج کے تحت کل 182 اداروں کی جانچ کے دوران بے قاعدگی خاص طور سے ہاؤس کیپنگ، سیکورٹی، نرسنگ اردلی وغیرہ کے کام کرنے والی کمپنی میں دیکھنے کو ملی۔ وزیر محنت جناب گوپال رائے نے لیبر ڈپارٹمنٹ کے ترغیبی ٹیم کے ساتھ جا کر خود ان 9 اداروں کی جانچ کی:-

1. بنجے گاندھی میموریل ہاسپٹل
2. فورٹس ہاسپٹل
3. مدن موہن مالویہ ہاسپٹل
4. لال بہادر شاستری ہاسپٹل، کھڑی پور
5. راؤ تلال رام میموریل ہاسپٹل
6. چودھری برہم پرکاش آیور وید سنسٹھان
7. تاج ہوٹل
8. جی ٹی بی ہاسپٹل
9. آئی ایس بی ٹی

گھر بیٹھے لیجیے ڈی ٹی سی بس پاس



دہلی سرکار نے بس سے سفر کرنے والے لوگوں کو تحفہ دیتے ہوئے ڈی ٹی سی بس پاس بننے کی عمل کو آن لائن کر دیا ہے اب ڈی ٹی سی بس پاس بنوانے کے لئے لوگوں کو لمبی قطاروں میں نہیں لگنا پڑے گا۔ اس خدمت کے شروع ہونے سے ڈی ٹی سی بس پاس کے لئے گھر بیٹھے درخواست کیا جاسکے گا۔ درخواست کی عمل پورا ہونے پر ایک درخواست دہندگان کا بس پاس آن لائن فارم میں دیئے گئے پتے پر پانچ کام کے دنوں کے اندر تقسیم کیا جائے گا۔

درخواست دہندگان کو اپنے نام، والد کا نام، پیدائش کی تاریخ وغیرہ بھرنے ہوگا اور پورٹل پر فوٹو اپلوڈ کرنا ہوگا۔ یہ خدمات 24 گھنٹے چالو رہے گی۔ ڈی ٹی سی / کریڈٹ کارڈ اور نیٹ بینکنگ کے ذریعہ سے بس پاس کے لئے ادائیگی کی جاسکتی ہے۔ بس پاس کے لئے کئے گئے ادائیگی کی تصدیق سے متعلق تفصیلات کے لئے درخواست دہندگان کو ایک ایس ایم ایس اور ای میل بھیجا جائے گا۔ اس خدمات کے اندر درخواست دہندگان کو www.indiapost.gov.in پر بس پاس کے تفصیل سے متعلق جانکاری حاصل کرنے کی بھی سہولتیں دی گئی ہیں۔

وزیر نقل و حمل نے بتایا کہ ڈی ٹی سی بس پاس کو رد کرنے کے لئے درخواست دہندگان کو کسی بھی دہلی ٹرانسپورٹ کارپوریشن کے پاس سیکشن میں اصل بس پاس جمع کرنا ہوگا اور واپسی کی رقم درخواست دہندگان کے بینک اکاؤنٹ میں جمع ہو جائے گی۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ اس خدمات کے شروع ہونے سے انسانی طاقت کی بچت کے ساتھ ساتھ بنیادی ڈھانچے کی لاگت میں بھی بچت آئے گی۔

دہلی سرکار کے وزیر نقل و حمل جناب کیلاش گہلوت نے دہلی میٹروپولیٹن میں آن لائن ڈی ٹی سی بس پاس سہولت کا افتتاح کیا۔ اس موقع پر کمشنر نقل و حمل محترمہ ورشا جوشی، دہلی ٹرانسپورٹ کارپوریشن کے منیجر ڈائریکٹر جناب منوج کمار کے علاوہ محکمہ نقل و حمل اور دہلی ٹرانسپورٹ کارپوریشن کے اعلیٰ افسران بھی موجود تھے۔ آن لائن ڈی ٹی سی بس پاس خدمات کے اندر ڈی ٹی سی کی ایئرپورٹ ایکسپریس خدمات سمیت اے سی اور نان اے سی بسوں کے عمومی سبھی روٹوں اور دہلی این سی آر کے گروگرام، فرید آباد، بہادر گڑھ اور غازی آباد روٹوں کے پاس بنوائے جاسکتے ہیں۔

خدمات کے پہلے مرحلہ میں عام بس پاس آن لائن کے ذریعہ نہیں گے اور ان کی ہوم ڈیلیوری ہوگی۔ آنے والے دنوں میں خدمات کی توسیع کر رہا ہوں کے پاس جو کہ دہلی سرکار کے ذریعے معذور، بزرگ، طلباء و دوسروں کو دیئے جاتے ہیں ان کو بھی اس خدمات سے جوڑ دیا جائے گا۔

آن لائن بس پاس حاصل کرنے کے لئے کہیں سے بھی www.dtcpass.delhi.gov.in پر درخواست کی جاسکتی ہے۔

■ (گووند)

خود کو دور رکھا ہو جس انگریزی سلطنت کا سورج نہیں ڈوبتا تھا، اس سے آزادی دلانے والے گاندھی جی کا قد کسی بھی عہدے سے بڑا تھا۔

آنے والی نسلوں کو یقین ہی نہیں ہو گا کہ گاندھی جیسا شخص بھی زمین پر جنما تھا۔

- البٹ آئمنس ٹائن، مہان وگیا نک

مہا تما گاندھی خوفناک تنہا سب کی زندگی گزارتے تھے ان کے کروڑوں دیش واسی انہیں دیوی تحریک دستیاب سنت مانتے تھے۔ ہدف تد بیر میں ان کی سچائی اور وفا داری پر انگلی نہیں اٹھائی جا سکتی۔

- کلی میٹ اٹلی، سابق برٹش پی ایم

مہا تما گاندھی کی زندگی مثالی ہے۔ جو وہ دنیا کے کئی بڑے نیتا ان کے اصولوں سے متاثر ہیں اور عدم تشدد کی بات کر تے ہیں۔ عدم تشدد اور مذہبی تحمل بھارت کے دو خزانے ہیں۔

- دلائلی لامہ، تبتیوں کے مذہبی نیتا

جدید تاریخ میں کسی بھی ایک شخص نے اپنے کر دار کی ذاتی طاقت، مقصد کی پاکیزگی اور اختیار نما مقصد کیلئے بے تعلق عقیدت سے لوگوں کے دماغوں پر اتنا اثر نہیں ڈالا، جتنا مہا تما گاندھی کا اثر دنیا پر ہوا۔

- فلپ نوئل بیکر، نوبل پرسکار وجیتا، برٹش راج نیتک

دوسرے عالمی جنگ کے دوران جب لندن پر بم گرائے گئے تھے، تب گاندھی جی روئے تھے۔ انہوں نے اپنی زندگی کے دو عشرہ جنوبی افریقہ میں بتائے، لیکن وہاں بھی وکالت سے زیادہ سوشل سروس کی۔

گاندھی جی سنت تھے، لیکن لگا تار سیاست میں فعال رہے۔ اگر راج نیتا ان سے سبق لے سکیں تو دنیا بہت بہتر ہو سکتی ہے انہوں نے سماج کے سب سے آخری آدمی سے بات چیت کی، اسی طرح مشکل زندگی جی۔ لنگوٹی والے باپ کو کھلائے اور منتر دیا کہ 'جب بھی کچھ کرو سماج کے آخری آدمی کی زندگی پر اس سے پڑنے والے اثر کے بارے میں سوچو'۔ وقت کی قدر اور نظم و ضبط کی تو وہ مثال ہی تھے۔

گاندھی جی سے تحریک لینے والوں میں مائین لو تھر کنگ جونیر، دلائلی لامہ، ڈیس منڈ ٹوٹو یا نیلسن منڈیلا جیسے لوگ ہی شامل نہیں رہے ہیں، کیونکہ انقلاب کے ہیرو کہے جانے والے انقلابی چگ ویرا نے بھی ایک بار کہا تھا کہ اگر ان کے پاس گاندھی جیسا کوئی ہیرو ہوتا تو انہیں بندوق نہیں اٹھانی پڑتی۔

آزادی کی لڑائی کی قیادت کرنے کے باوجود گاندھی جی نے کوئی عہدہ قبول نہیں کیا، بلکہ عوام کے بیچ اپنے سچ کا استعمال کرتے رہے ایسا دوسرے کسی ملک میں نہیں ہوا جہاں آزادی دلانے والے نے اختیار سے



دنیا بچے گی گاندھی کے راستے

ہوں۔ گاندھی جی کی تحریک کا وافر مقدار میں ترجمہ ہوا ہے۔
گاندھی جی نے لوگوں کو ایک دوسرے کے مذہب کی طرف عزت و
احترام دکھایا اور اسے سمجھنے پر زور دیا۔ وہ مانتے تھے کہ باہمی بات چیت
میں ہی انسان کا فائدہ ہے یہ وجود کو ممکن بناتا ہے گاندھی جی نے شروع سے
ہی قدرت کے ان پشناپ استحصال کے لئے خبردار کیا تھا وہ کہتے تھے کہ
زمین سب کی ضرورت پوری کر سکتی ہے لیکن کسی ایک کی بھی حوس پورا کر
نے کی صلاحیت اس کے پاس نہیں ہے۔ منافع کے لالچ میں قدرت کے
اندھا دھن استحصال کا جو نقصان ہے، وہ سامنے ہے۔ اسی لئے گاندھی جی
سامان ہی نہیں ذریعہ کی پاکیزگی پر بھی زور دیتے تھے۔
گاندھی جی کے نظر میں جدیدیت کا مطلب گلا کاٹ مقابلے سے نہیں تھا
ایک بار ایک برطانوی صحافی نے مہاتما گاندھی سے پوچھا کہ جدید تہذیب
پر آپ کی سوچ کیا ہے؟ گاندھی جی کا جواب تھا۔ 'میری نظر میں یہ ایک
اچھا خیال ہے اس سوچ کے ساتھ گاندھی جی نے مغربی ملکوں کی خلاف کبھی
نفرت کا خیال نہیں رکھا۔ انہوں نے اپنے مثال کے طور پر 'ہینری
سالٹ' جان رسکن اور لیف تالس توئے کا کئی بار ذکر کیا۔ یہ تین گورے تھے۔

دنیا میں بارودی گندھ بڑھ رہی ہے۔ نسلی اور فرقہ پرستی تشدد نے جیسے
تواریخ چکر کو الٹ دیا ہے۔ دوسری طرف قدرت سے کھلواڑ نے جس
آلودگی کو خوفناک بنایا ہے۔ وہ پوری زمین کے لئے بحران بن گیا ہے
ایسے صورت حال میں سب کو گاندھی کی یاد آ رہی ہے۔ وہ بھارت کے
راشر پتا ہی نہیں، دنیا بھر کے لئے مہاتما ہیں۔ تاریخ میں بدھ اور عیسیٰ مسیح
کے بعد گاندھی ہی ہیں جن کی ایذا رسانی اور شفقت نے پورے
میلک کے نفسیات کو متاثر کیا ہے۔

مجلس اقوام متحدہ نے گاندھی جی کے جنم دن 2 اکتوبر کو "وشواہنسا
دیوس" اعلان کیا ہے۔ اس دن سبھی ملکوں میں گاندھی جی کو ان کے ضبط
نفس اور ایذا رسانی کے خیالوں کے لئے یاد کیا جاتا ہے۔ جو زمین پر مستقل
امن کے لئے ضروری ہے۔

گاندھی جی کی ہی دین ہے کہ دنیا بھر میں سرکاروں کے خلاف عوام کا
استقبال غیر متضاد طریقے سے درشایا جاتا ہے اور اس کی طاقت نہ صرف
مظاہرین بلکہ سرکاریں بھی محسوس کرتی ہیں۔ تمام ملکوں میں گاندھی جی
کے نام پر سڑکیں ہیں ان کی تصویریں لگی ہیں اور شاید ہی کوئی قابل ذکر
زبان ہو جس میں گاندھی جی کے اصولوں پر بنی کتابیں موجود نہ

اس انٹر پرائز کورس یا اونٹر پرائز شپ کیری کولم کے بارے میں جناب سسودیانے کہا ہے کہ ملک میں بے روزگاری سب سے بڑا مسئلہ ہے لیکن اسکولوں میں ایسی تعلیم نہیں دی جاتی جس سے لوگ خود کار بزنس شروع کر سکیں۔ فورتحہ گریڈ کی نوکری کیلئے بھی ایم بی اے، انجینئر سے لے کر پی ایچ ڈی اسٹوڈینٹس تک درخواست کر دیتے ہیں۔

جناب سسودیانے کہا ہے کہ 99 فیصدی بچے نوکری کیلئے پڑھائی کرتے ہیں ساری تعلیمی نظام کا ہی زور نوکری پانے پر ہے، پر یہ سوال ہے کہ آج نوکری دینے والے کہاں ہیں۔ کچھ اسکول میں اونٹر پرائز شپ کے

12 ویں درجہ کے طلبہ کو دو گروپ میں بانٹا گیا ہے۔ اس کے تحت 9 ویں و 10 ویں درجہ کو جونیئر ہائی اسکول اور 11 ویں و 12 ویں درجہ کو سینئر ہائی اسکول میں بانٹا گیا۔ دونوں گروپ کیلئے انٹر پرائز کورس کو تعلیمی سیشن 2019-20 میں تیار کیا جائے گا۔

نائب وزیر اعلیٰ نے اسٹیٹ کونسل آف ایجوکیشن ریسرچ اینڈ ٹریننگ (ایس سی ای آر ٹی) دہلی کے ڈائریکٹر کو ہدایت دیا ہے کہ وہ ایک ورکنگ گروپ کو قائم کریں جس میں ایس سی ای آر ٹی، ضلع سکشا اینڈ پرمکشن سنسٹھان (ڈائٹ) ڈائریکٹوریٹ ایجوکیشن کے ٹیچر کے فیکلٹی



پروگرام چلائے جا رہے ہیں لیکن ان کا مقصد کچھ اسکل دینا ہے ناکہ بچوں میں اونٹر پرائز بننے کا حوصلہ پیدا کرنا۔ اس لئے ایسے مائنڈ سیٹ والوں کی کمی ہے جو لوگوں کو نوکری دینا چاہتے ہیں۔ نتیجہ یہ ہے کہ ہمارے ملک کی بہترین رہنما غیر ملکی کمپنیوں میں چپ چاپ کام کر رہے ہیں۔ ضرورت ایسے آئٹم پر نیور تیار کرنے کی ہے جو نہ صرف بے روزگاری کے مسئلے کا حل کر سکے بلکہ ملک کی اقتصادی ترقی میں بھی شراکت دے سکے۔ دہلی سرکار کا انٹر پرائز کورس اسی مقصد کو وقف ہے۔ ایس سی ای آر ٹی اس حوالہ جات میں ایک کانفرنس منعقد کرائے گا جس میں اس سیکٹر سے جڑے شخصوں اور گروپوں کو مدعو کرے گا۔ ■

کو شامل کیا جائے۔ اس گروپ کے ممبروں کو یہ حق ہوگا کہ وہ دوسرے ماہر خصوصیوں کی خدمات کو ایک ساتھ لے کر آئیں گے اور ایس سی ای آر ٹی کے معیار کے مطابق ان کے محنتوں کی ادائیگی کریں گے۔

اس انٹر پرائز کے تحت ہاؤ بھاؤ سے جڑی باتیں، شخصیت ترقی، مہارت کی ترقی، مواصلات کی مہارت، انگلش بولنا کسی غیر ملکی زبان کا علم بزنس پلان، کاروباری حکمت عملی، مارکیٹنگ، فروخت اور بزنس آپریشن، اصلی کاروبار کو قائم رواجوں، ویتھر کی شروعات وغیرہ سے جڑی باتوں کو روچک کہانیوں اور مختلف سرگرمیوں کے ذریعے بتایا جائے گا۔



اب سرکاری اسکولوں سے نکلیں گے کاروباری، سات لاکھ طلباء پڑھیں گے انٹرپرائز کا سبق

نائب وزیر اعلیٰ نے اسٹیٹ کونسل آف ایجو کیشن ریسرچ اینڈ ٹریننگ (ایس سی ای آر ٹی) دہلی کے ڈائریکٹر کو ہدایت دیا ہے کہ وہ ایک ورکنگ گروپ کو قائم کریں جس میں ایس سی ای آر ٹی، ضلع سکسٹائینڈ پر شکشن سنسٹھان (ڈائٹ) ڈائریکٹوریٹ ایجو کیشن کے ٹیچر کے فیکلٹی کو شامل کیا جائے۔ اس گروپ کے ممبروں کو یہ حق ہو گا کہ وہ دوسرے ماہر خصوصیوں کی خدمات کو ایک ساتھ لے کر آئیں گے اور ایس سی ای آر ٹی کے معیار کے مطابق ان کے محنتوں کی ادائیگی کریں گے۔

اگلے سال سے دہلی کے سرکاری اسکولوں میں پڑھ رہے نوے سے بارہویں کے سات لاکھ طلباء کو کاروباری علم بھی دیا جائے گا۔ سرکار نے اس کے لئے انٹرپرائز کورس تیار کرایا ہے جسے اپریل 2019 میں بطور پائلٹ پروجیکٹ شروع کیا جائے گا۔ دہلی کے وزیر تعلیم نے سبھی اسکولوں کو ہدایت جاری کی ہے کہ جولائی 2019 کے پہلے ہفتے سے لاگو ہو جانا چاہئے۔

وزیر تعلیم منیش سسودیا کے ذریعہ جاری تصور نظریات کے تحت کورس میں دہلی کے ایک ہزار سرکاری اسکولوں میں 9 ویں سے 12 ویں درجہ کے سات لاکھ طلباء کے لئے ہر روز ایک گھنٹے کی کلاسیں لگیں گی۔ جن میں دس ہزار ٹرینڈ ٹیچر کلاسیں لیں گے۔

سرکار کا مقصد ہے کہ 2019 کی مئی-جون کی گرمی کی چھٹیوں میں اس کورس کی بنیادی تربیت پورا کر لیا جائے۔ اس میں 9 ویں سے



دہلی میں چلے گی صفائی کی درس

نے کہا کہ اگر ہمیں لگتا ہے کہ کتابوں میں صفائی کے بارے میں پڑھانے اور 'سوچ بھارت ابھیان' چلانے سے یہ سب ٹھیک ہو جائے گا، تو یقیناً ماننے کبھی بھی، کچھ بھی ٹھیک نہیں ہوگا۔ انہوں نے بتایا کہ انہوں نے دنیا کے کئی ملکوں میں ایسا ماڈل دیکھا ہے جہاں بچے اپنے اسکولوں میں صفائی میں پوری طرح سے شرکت کرتے ہیں جھاڑو۔ پوچھا لگانے، ڈیسک کی دھول صاف کرنے ویپر۔ پودوں کو پانی دینے تک کے کام میں اپنا کردار ادا کرتے ہیں۔ اس سے ان میں بیداری پیدا ہوتی ہے۔ وہ چاہتے ہیں کہ دہلی کے اسکولوں میں بھی یہاں کے حساب سے کوئی ماڈل تیار ہو۔ انہوں نے کہا کہ یہ کورس اکٹھی ویٹی پر مبنی ہوگا۔ اس کے لئے الگ سے کوئی پیئرڈ نہیں ہوگا۔ الگ سے کوئی کتاب نہیں ہوگی۔ انہوں نے دہلی کے سرکاری اور پرائیویٹ اسکولوں کے پرنسپلوں، اساتذہ اور بچوں سے اس بارے میں مشورہ مانگا ہے۔ مشورہ میں یہ بتانا ہے کہ اس کورس کو تیار کرنے میں کیا کیا روش شامل کی جانی چاہئے اور کیا کیا روش شامل نہیں کی جانی چاہئے۔ ■

دہلی سرکار تعلیم کے میدان میں روز نئے تجربہ کے لئے جانی جاتی ہیں۔ اسی ترتیب میں اب اسکولوں میں صفائی کی نصاب تعلیم شروع کی جائے گی۔ نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا نے دہلی سچیو الیہ میں منعقد سوچ و دیالیہ پرسکار پروگرام میں اس کا اعلان کیا۔ انہوں نے کہا کہ اس نصاب تعلیم سے بچے اپنے اسکولوں کی صفائی میں بھاگدار بن سکیں گے اور ان کے اندر صفائی کرنے کی عادت بھی اُجاگر ہوگی۔ وزیر تعلیم نے کہا کہ اب تک کے ماڈل میں اسکولوں میں ہونے والی گندگی اور پھیلنے والے کوڑے میں بچے بھی شامل ہوتے ہیں، لیکن صفائی میں ان کی شرکت نہیں ہوتی۔ ہر اسکول میں تقریباً تین چار ہزار بچے اور اساتذہ آتے ہیں۔ یہاں گندگی اور دھول کو صاف کرنے کے لئے الگ سے صفائی ملازمین ہوتے ہیں، لیکن صفائی کو لیکر بچوں کی کوئی جوابدہی نہیں ہوتی۔

جناب سسودیا نے کہا کہ وہ چاہتے ہیں کہ بچوں کے اندر صفائی کرنے کا بھی رویہ تیار ہو۔ اسی مقصد سے یہ کورس شروع کیا جا رہا ہے۔ انہوں



پیرس کے ایفل ٹاور کی طرح سگنیچر برج کے ٹاپ سے دہلی کا فلک نما منظر دیکھا جاسکے گا۔ ٹاپ پر لے جانے کے لئے اس برج میں چار ایلی ویٹرز بھی لگائے گئے ہیں۔ ہر لفٹ سے 50 لوگ اوپر جاسکیں گے۔ یہ دیش کا پہلا کیبل اسٹائل برج ہے۔ دوسرے مرحلہ میں اس برج کو سیاحتی مقام کے طور پر ترقی یافتہ کیا جائے گا۔ آٹھ لین والے 575 میٹر لمبا برج غازی آباد اور لونی جانے والوں کا کم سے کم آدھا گھنٹہ وقت بچائے گا۔ ٹریفک جام سے کافی حد تک نجات مل سکے گی۔

سگنیچر برج کے اہم پیلر کی اونچائی 154 میٹر ہے۔ برج پر 19 اسٹے کیبل ہیں۔ جن پر برج کا 350 میٹر حصہ بغیر کسی پلر کے روکا گیا ہے۔ پلر کے اوپری حصہ میں چاروں طرف شیشے لگائے گئے ہیں۔ یہ برج مالی نظام کو رفتار دیا کیوں کہ اسے دیکھنے کیلئے نہ صرف این سی آر اور ملک بھر سے بلکہ دنیا کے لوگ آئیں گے۔

اس برج کی تعمیر کا من ویلتھ کھیلوں کے پہلے ہی پورا کر لیا جانا تھا۔ لیکن کام کو رفتار ملی دہلی میں کچری وال سرکار آنے کے بعد۔ سرکار نے اس کی تعمیر پوری کرانے میں کوئی کسر باقی نہیں رکھی۔ نائب وزیر اعلیٰ منیش سوسودیا لگا تار اس پل کے تعمیراتی کام کا جائزہ لیتے رہے اور راستے کی تمام رکاوٹوں کو دور کرنے میں جئے رہے۔ آخر کار دہلی کو اس کی نئی پہچان حاصل ہوگئی۔ ■

وزیر اعلیٰ کیجریوال نے پُل کا افتتاح کرتے ہوئے اسے ترقی کی نئی تصویر بنایا۔ انہوں نے اول وزیر اعظم جواہر لال نہرو کو یاد کرتے ہوئے کہا کہ ملک کو مندر مسجد کی نہیں ایسے ہی تعمیراتی کاموں کی ضرورت ہے۔

پیرس کے ایفل ٹاور کی طرح سگنیچر برج کے ٹاپ سے دہلی کا پورا فلک نما منظر دیکھا جاسکے گا۔ ٹاپ پر لے جانے کیلئے اس برج میں چار ایلی ویٹرز بھی لگائے گئے ہیں۔ ہر لفٹ





سگنچر برج

اونچائی کا ہے۔

وزیر اعلیٰ کچری وال نے پل کا افتتاح کرتے ہوئے ایسی ترقی کی
نئی تصویر بتایا۔ انہوں نے اول وزیر اعظم جواہر لال نہرو کو یاد
کرتے ہوئے کہا کہ ملک کو مندر مسجد کی نہیں ایسے ہی تعمیراتی
کاموں کی ضرورت ہے۔
یمناندی پر بنے اس برج سے شمال اور شمال مشرقی دہلی کے بیچ سفر
کرنے والے لوگوں کے وقت میں بچت ہوگی۔ اس کے ساتھ ہی
وزیر آباد پل کے اوپر ٹریفک کا بوجھ بھی کم ہوگا۔



آداب! دہلی کا سگنچر برج دہلی
کی جانب سے دسوں سمتوں کو ایسے ہی
استقبال کرتا نظر آنے لگا ہے۔

قریب 14 سال کے انتظار کے بعد وہ گھڑی آئی جب
دہلی کو اس کی نئی پہچان ملی۔ 4 نومبر کو وزیر اعلیٰ اروند
کچریوال نے نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا کے ساتھ
اس پل کا افتتاح کیا۔ پل کا چوٹی قطب مینار سے دو گنی



साहिब श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व की लख् लख् बधाईयां

-अरविंद केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली



DEPARTMENT OF
**Art
& Languages**
DELHI GOVERNMENT

दिल्ली सरकार
आप की सरकार

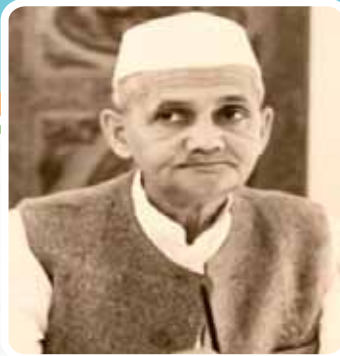
पजाबी अकादमी, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार



अरविंद केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के 150वें जन्म दिवस पर शत् शत् नमन

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार



अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री, दिल्ली

लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्म दिवस पर शत् शत् नमन

सामान्य प्रशासन विभाग, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार